सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 149, नई दिल्ली । शुक्रवार, 09 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

03 स्कूल में प्रिरी नर्सरी के बच्चौं में फैली दानों और मुंह में छालों की बीमारी

06 नाइट्रोजन प्रदूषण के बढ़ते खतरे

08 मिशन शक्ति पर रुपये की अनियमितता का आरोप

रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 4142] नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्तूबर 18, 2018/आश्विन 26, 1940
No. 4142] NEW DELHI, THRUSDAY, OCTOBER 18, 2018/ASVINA 26, 1940

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 18 अक्तूबर, 2018

का.आ. 5333(अ).—केन्द्रीय सरकार, मोटर यान अधिनियम,1988 (1988 का 59) की धारा 66 की उपधारा (3) के खंड (ङ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह आदेश देती है कि धारा 66 की उपधारा (1) के उपबंध, यथास्थिति, माल या यात्रीयों के वहन के प्रयोजन के लिए प्रयुक्त या प्रयोग किये जाने वाले निम्नलिखित प्रकार के परिवहन यानों को लागू नहीं होंगें अर्थात:-

(i) केन्द्रीय मोटर यान नियम, 1989 के नियम 2 के खंड (प) में यथा परिभाषित बैटरी चालित यान;

(ii) मेथनाल ईंधन द्वारा चालित कोई यान और;

(iii) इथनाल ईंधन द्वारा चालित कोई यान।

[फा. सं. : आर टी-11036/80/2012-एम वी एल (भाग-IV)]

प्रियांक भारती, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS

ORDER

New Delhi, the 18th October, 2018

S.O. 5333(E).—In exercise of the powers conferred by clause (n) of sub-section (3) of section 66 of the Motor Vehicles Act, 1988 (59 of 1988), the Central Government hereby orders that the provisions of sub-section (1) of section 66 of the said Act shall not apply to following types of transport vehicles used, or to be used, for the purpose of carriage of goods or passengers as the case may be, namely:-

6138GI/2018 (1)

खुशखबरी ! दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे जल्द होगा शुरू

सामने आई तारीख; अंतिम चरण में परियोजना का काम

संजय बाटला

फरीदाबाद में रहने वाले लोगों के लिए बड़ी खबर है। अगले माह के अंत तक दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे शुरू हो सकता है। इस परियोजना का काम अब अंतिम चरण में है। बड़े पैमाने पर पौधारोपण किए जाने का लक्ष्य रखा गया है। 7 जुलाई को जिला उपायुक्त विक्रम सिंह ने और एनएचएआई अधिकारियों ने एक्सप्रेस-वे का निरीक्षण किया था।

नई दिल्ली/फरीदाबाद। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे सितंबर के आखिर में चालू हो सकता है। इस परियोजना का काम अंतिम चरण में है। सभी फ्लाईओवर पर सड़कों का निर्माण कार्य जारी है। फ्लाईओवर के नीचे भी काम चल रहा है।

दोनों ओर 25 हजार से ज्यादा पौधे रोपे जाने का टारगेट

बुधवार को जिला उपायुक्त विक्रम सिंह ने एनएचएआई अधिकारियों (NHAI) ने एक्सप्रेस-वे का निरीक्षण किया। इस दौरान एक्सप्रेस-वे किनारे पौधारोपण किया गया। दोनों ओर 25 हजार से अधिक पौधे रोपे जाने का लक्ष्य तय किया गया है।

जिला उपायुक्त व एनएचएआई अधिकारियों के नाम से भी अशोका के पौधे रोपे गए। दिल्ली के डीएनडी फ्लाईओवर से आगरा नहर को पार करते हुए बाईपास पर एक्सप्रेस-वे का निर्माण किया जा रहा है। 26 किलोमीटर बाईपास इसका हिस्सा बन रही है। कैल इंटरनचेंज से आगे एक्सप्रेस-वे पर आवागमन शुरू हो गया है।

काटे गए हैं काफी पेड़

इस परियोजना के लिए काफी पेड़ काटे गए हैं। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण की पूरी ग्रीनबेल्ड उजड़ चुकी है। इसके बदले में यहां एक और ग्रीनबेल्ट विकसित की जानी है। इसके लिए एनएचएआई हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के पास पांच करोड़ रुपये का बजट जमा करा चुका है। इस दिशा में कैल गांव की ओर से काम भी शुरू हो गया है।

भारतीय रेल की गौरवगाथा: 170 वर्षों की अद्वितीय यात्रा : डॉ. लॉजिस्टिक्स

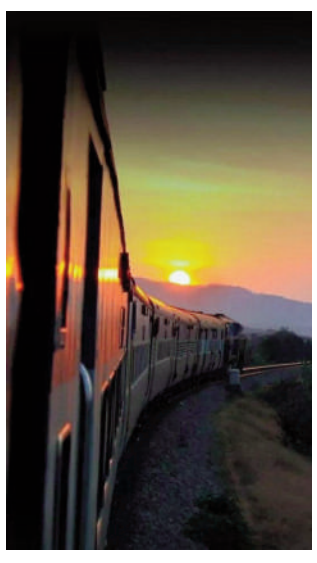

18 53 का वर्ष, जब मुंबई से ठाणे के बीच केवल 34 किलोमीटर की पहली रेलगाड़ी चली थी, शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह मामूली सी शुरुआत भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन जाएगी। आज, 170 से अधिक वर्षों के बाद, भारतीय रेल एक समावेशी और विशाल ताकत के रूप में उभर चुकी है, जिसने न केवल देश के उद्योग और कृषि क्षेत्र के विकास को गति दी है बल्कि आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बचपन के सफर की रेलगाड़ी

बचपन में हमारे लिए सबसे सुंदर सफर रेल का सफर हुआ करता था, जब हम गर्मियों की छुट्टियों में अपने घर से निकलकर नानी घर या दादी घर जाया करते थे। यह सफर सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि यादों की पोटली में बंद सुनहरी पल थे। मेरे सफर की भी यही कहानी है, या यूँ कहें कि पिताजी के रेलवे में होने के कारण, हमने रेल को बहुत करीब से देखा और समझा है।

रेल के हर हिस्से से हमारा एक गहरा जुड़ाव रहा है। अक्सर हम पिताजी से रेल की कहानियाँ सुना करते थे—कैसे मालगाड़ियाँ चलती हैं, कैसे ट्रेन का संचालन संभाला जाता है, और कैसे लोकोमोटिव इंजन से लेकर आज के आधुनिक सफर तक का सफर तय हुआ है। ये सारी बातें हमारे लिए रोमांचक और गर्व का विषय थीं।

आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि भारतीय रेल की गौरव गाथा न केवल मेरे लिए, बल्कि हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है। यह कहानी हमारे बच्चों को जरूर सुनानी चाहिए ताकि वे भी जान सकें कि कैसे रेल ने हमारे जीवन को जोड़ा है और हमारी यादों को समृद्ध किया है।

साथ ही, एक जिम्मेदार यात्री होने के नाते, यह हमारा कर्तव्य है कि जब भी हम रेल यात्रा करें, तो न केवल अपने सामान का ध्यान रखें, बल्कि रेलवे की संपत्ति की सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

जब हमने मालगाड़ी के अलावा दिल्ली के पहले इनलैंड कंटेनर डिपो, आईसीडी तुगलकाबाद, कोंकोर में प्रवेश किया, तो कंटेनर वाले डब्बे जैसी रेलगाड़ी को देखना एक अत्यंत रोमांचक पल था। आज ना वह समय रहा, ना ही हमारे पिताजी रहे, लेकिन उनकी शिक्षाओं ने हमें एक संवेदना से भर दिया। हमने महसूस किया कि हमारे पिताजी जैसे अनेकों लोग आज रेल के इस महान गाथा का हिस्सा बने हुए हैं। कुछ हैं, कुछ चले गए, लेकिन 170 वर्षों का इतिहास जीवंत करते हुए, हम आपके लिए एक छोटी सी गाथा ला रहे हैं।

यह कहानी भारतीय रेल की अद्वितीय यात्रा की है—एक छोटी सी रेलगाड़ी से लेकर आज के कंटेनर फ्रेट स्टेशनों और डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर्स तक। डबल डेकर गाड़ियाँ आ चुकी हैं और आने वाले समय में रेल परिवहन में और भी कई परिवर्तन होने वाले हैं।

इस इतिहास का हिस्सा बनकर, हम सभी को गर्व होना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों और युवाओं से साझा करना चाहिए। ताकि वे भी समझ सकें कि कैसे एक साधारण रेलगाड़ी ने भारत की लॉजिस्टिक दुनिया को नया आयाम दिया है और कैसे यह परिवर्तन हमारे भविष्य को आकार दे रहा है।

आइए, इस ऐतिहासिक यात्रा का हिस्सा बनें और युवाओं को प्रेरित करें कि वे भी इस विकास के हिस्से बनें।

एक व्यापक नेटवर्क का निर्माण

भारतीय रेल का नेटवर्क अब 68,043 किलोमीटर की दूरी को कवर करता है, जिसमें 7,308 स्टेशनों का जाल फैला हुआ है। यह आंकड़ा भारतीय रेल के विस्तार और उसकी बढ़ती महत्वाकांक्षाओं का एक प्रतीक है। यह केवल एक यात्री परिवहन साधन नहीं है, बल्कि यह उद्योगों के लिए जीवनदायिनी है, कृषि उत्पादों को मंडियों तक पहुंचाने का माध्यम है, और संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांधने का एक सफल प्रयास है।

इंजन और डिब्बों का विशाल बेड़ा

भारतीय रेल के पास वर्तमान में 13,215 इंजन, 74,744 यात्री गाड़ियां, 10,103 कोचिंग वाहन और 3,18,896 डिब्बों का एक विशाल बेड़ा है। यह संख्याएं न केवल रेलवे के तकनीकी विकास का प्रतीक हैं, बल्कि यह भी दर्शाती हैं कि कैसे यह प्रणाली समय के साथ लगातार उन्नत हुई है।

विद्युतीकरण और आधुनिकीकरण

भारतीय रेल ने विद्युतीकरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। आज, समूचे रेल मार्ग किलोमीटर का लगभग 74.06% और परिचालन उपयोग मार्ग का 80.38% हिस्सा विद्युतीकृत हो चुका है। इसका अर्थ यह है कि रेलवे न केवल अपनी लागत कम कर रहा है बल्कि पर्यावरण की रक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

लॉजिस्टिक उद्योग में भारतीय रेल का योगदान

लॉजिस्टिक्स उद्योग में भारतीय रेल की भूमिका अद्वितीय है। कच्चे माल से लेकर तैयार उत्पादों तक, भारतीय रेल ने यह सुनिश्चित किया है कि देश के हर कोने में समय पर और सुरक्षित रूप से माल पहुँचाया जा सके। यह लॉजिस्टिक्स की उस कड़ी को पूरा करता है जो देश के आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है।

भारतीय रेल ने अपनी 170 वर्षों की यात्रा में असाधारण प्रगति की है। इसने देश की अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है और आने वाले समय में भी यह प्रणाली भारत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी। एक मामूली शुरुआत से एक वैश्विक महत्व की ताकत बनने तक, भारतीय रेल की यह यात्रा वास्तव में प्रेरणादायक है।

भारतीय रेल की यह कहानी केवल उसके विस्तार और प्रगति की नहीं है, बल्कि यह उस संकल्प की कहानी है जिसने इसे हर चुनौती के बावजूद न केवल जीवित रखा बल्कि उसे और भी अधिक सशक्त और समावेशी बनाया।

"गाड़ी बुला रही है, सीटी बजा रही है,
चलना ही जिंदगी है, चलती ही जा रही है।"

गाड़ी की सीटी बज रही है, और उसकी ध्वनि में एक अनकही कहानी छिपी है। यह आवाज हमें याद दिलाती है कि जीवन एक निरंतर यात्रा है—एक ऐसी यात्रा जो कभी रुकती नहीं। जैसे गाड़ी लगातार चलती रहती है, वैसे ही जिंदगी भी निरंतर गतिमान रहती है।

हर मोड़ पर एक नया अनुभव, हर स्टेशन पर एक नई शुरुआत। यह यात्रा हमें सिखाती है कि चलते रहना ही जीवन है। चुनौतियाँ चाहे कितनी भी हों, स्थिरता कभी समाधान नहीं होती।

गाड़ी की सीटी हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपनी जिंदगी की राह पर चलते रहें, नए अनुभवों को अपनाएं, और हर चुनौती को एक अवसर के रूप में देखें। याद रखें, जैसे गाड़ी चलती ही जाती है, वैसे ही जिंदगी की यात्रा भी निरंतर चलती रहती है।

आइए, इस अद्भुत सफर को आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और यादगार बनाएं।

डॉ. अंकुर शरण (डॉ. लॉजिस्टिक्स)
drlogistics.ankur@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

मुंबई और हावड़ा रूट पर ट्रेनों की गति अब पकड़ेगी रफ्तार, समय कम लगने से यात्रियों को होगी सुविधा

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक ने नई दिल्ली-हावड़ा और नई दिल्ली-मुंबई रेलमार्ग पर रेलगाड़ियों की गतिसीमा 130 किलोमीटर प्रतिघंटा से बढ़ाकर 160 किलोमीटर प्रतिघंटा करने के कामों का प्रमुख तौर पर जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस पर तेजी से काम हो। इस दौरान मानसून सीजन में ट्रेनों की समय पर आवाजाही और यात्रियों की सुरक्षा पर विशेष बल दिया।

नई दिल्ली। उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक शोभन चौधरी ने विभागाध्यक्षों और मंडल रेल प्रबंधकों के साथ कार्य प्रगति की समीक्षा की। गत दिवस हुई समीक्षा बैठक में गतिशीलता में वृद्धि और अन्य विकासात्मक कार्यों व माल लदान जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। कहा, उत्तर रेलवे ने समयपालनबद्धता के बेहतर रिकॉर्ड को बनाए रखा है और रेलगाड़ियों के समय से चलने पर विशेष बल दिया है।

गति हो जाएगी 130 से 160 किलोमीटर प्रतिघंटा

महाप्रबंधक ने नई दिल्ली-हावड़ा और नई दिल्ली-मुंबई रेलमार्ग पर रेलगाड़ियों की गतिसीमा 130 किलोमीटर प्रतिघंटा से बढ़ाकर 160 किलोमीटर प्रतिघंटा करने के कार्यों की प्रगति का भी जायजा लिया। इस काम में तेजी लाने का निर्देश दिया। कहा, संरक्षा उत्तर रेलवे की प्राथमिकता हैं। उन्होंने रेलपथों, वैल्डों के अनुरक्षण मानकों और रेलपथों के निकट पड़े स्क्रैप को हटाने को लेकर किए गए कार्यों की भी समीक्षा की।

कार्यों में तेजी लाने और कार्यों की प्रगति की जांच के निर्देश

शोभन चौधरी ने कहा कि गतिशीलता अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिस पर नियमित और कड़ी निगरानी की आवश्यकता है। उन्होंने मंडलों को गतिशीलता बढ़ाने संबंधी कार्यों में तेजी लाने और कार्यों की प्रगति की जांच करने के लिए अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने चल रहे मानसून सीजन के दौरान संरक्षा बढ़ाने पर बल दिया और रेल परिचालन के दौरान आने वाली बाधाओं को समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने और रेल परिचालन में मानवीय भूलों को न्यूनतम करने पर जोर दिया।

चौधरी ने विभागाध्यक्षों और मंडल रेल प्रबंधकों को रेलगाड़ियों की समयपालनबद्धता में और सुधार करने और संरक्षा को प्राथमिकता देते हुए माल लदान की गति को बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा, माल ढुलाई लदान में होने वाली वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि उत्तर रेलवे अपने ग्राहकों को लागत प्रभावी परिवहन उपलब्ध कराने के प्रति प्रतिबद्ध है।

9 अगस्त को शुभ योगों में मनाई जायेगी नाग पंचमी

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार सावन शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर नाग पंचमी का पर्व आता है। इसमें नाग देवता की विशेष रूप से पूजा-आराधना की जाती है। नाग देवता भगवान शिव के गले की शोभा को बढ़ाते हैं।

नाग पंचमी का एक ऐसा त्योहार जो देशभर के लगभग सभी राज्यों में धूमधाम से मनाया जाता है। नाग पंचमी के दिन नागों की पूजा करने से व्यक्ति के जीवन में सुख-समृद्धि आती है। नाग पंचमी के दिन घर के मुख्य द्वार पर सांप की प्रतिमा जरूर बनानी चाहिए। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि इस बार नाग पंचमी पर कई योग बनने वाले हैं। इनमें शिववास योग, सिद्ध योग, साध्य योग, बव और बालव, करण योग शामिल है। इस बार नाग पंचमी हस्त नक्षत्र के शुभ संयोग में मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार इस साल सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि 9 अगस्त 2024 को पड़ रही है। हिंदू पंचांग के अनुसार सावन महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि की शुरुआत 09 अगस्त को मध्य रात्रि 12:36 मिनट पर होगी। वहीं, इसका समापन 10 अगस्त को देर रात्रि 03: 14 मिनट पर होगा। उदयातिथि के आधार पर नाग पंचमी का पर्व 09 अगस्त को मनाया जाएगा। यह त्योहार भगवान शिव और नागों की पूजा के लिए मनाया जाता है। इस दिन लोग नाग देवता की पूजा करते हैं और नाग मंदिरों में जाकर सांपों को दूध, दही, फल आदि चढ़ाते हैं। साथ ही कुंडली में काल सर्प दोष हो तो उससे निजात पाने के लिए कई तरह के उपाय किए जाते हैं।

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार सावन शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर नाग पंचमी का पर्व आता है। इसमें नाग देवता की विशेष रूप से पूजा-आराधना की जाती है। नाग देवता भगवान शिव के गले की शोभा को बढ़ाते हैं। हिंदू धर्म में नाग पंचमी का विशेष महत्व होता है। पौराणिक काल से ही सांपों को देवताओं की तरह पूजा जाता है। ऐसी मान्यता है कि नाग की पूजा करने से सांपों के डसने का भय समाप्त हो जाता है। भगवान भोलेनाथ के गले में भी नाग देवता लिपटे रहते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, नाग पंचमी के दिन नाग देवता की आराधना करने से भक्तों को उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है और कई अन्य प्रकार के भी शुभ फल प्राप्त होते हैं। ऐसी मान्यता है इस दिन नाग देवता की पूजा करने से घर में सुख और समृद्धि का वास होता है। इस बार नागपंचमी का पर्व विशेष योग में मनाया जाएगा। इन योगों में नागपंचमी का पर्व मनाने से सभी प्रकार के संकट दूर होते हैं।

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नाग पंचमी के दिन नाग देवता और शिव जी की पूजा करने से नाग के डसने और अकाल मृत्युव का खतरा टलता है. साथ ही भगवान शिव की पूजा से ग्रह दोष दूर होते हैं। विशेषतौर पर काल सर्प दोष से निजात पाने के लिए नागपंचमी का दिन सर्वोत्ताम माना गया है। नागों को धन का रक्षक माना गया है। नाग देवता की पूजा करने से खूब धन-दौलत मिलती है। नागपंचमी के दिन सुबह जल्दीध उठकर स्ना न करें। साथ ही भगवान शिव का स्मारण करें। नागपंचमी का व्रत कर रहे हैं तो व्रत का संकल्प। लें। इसके बाद चौकी पर नाग-नागिन की प्रतिमा बनाकर उसका दूध से अभिषेक करें। उन्हें फल, फूल, मिठाइयां अर्पित करें। धूप-दीप करें। अंत में नाग पंचमी की आरती करें। यदि कुंडली में काल सर्प दोष हो तो शिवलिंग पर चांदी का नाग-नागिन का जोड़ा अर्पित करें।. इससे काल सर्प दोष के कारण मिलने वाले अशुभ फल से निजात मिलती है।

नाग पंचमी संयोग

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि इस बार नाग पंचमी पर कई योग बनने वाले हैं। इनमें शिववास योग, सिद्ध योग, साध्य योग, बव और बालव, करण योग शामिल है। इस बार नाग पंचमी हस्त नक्षत्र के शुभ संयोग में मनाई जाएगी। इन दुर्लभ संयोग में पूजा करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के संकटों से मुक्ति मिलेगी और जीवन सुख-समृधि से भर जाएगा।

शिववास योग

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि वैदिक पंचांग के अनुसार नाग पंचमी पर दुर्लभ शिववास योग का निर्माण हो रहा है। इस दिन भगवान शिव कैलाश पर जगत जननी मां पार्वती के साथ रहेंगे। इस समय में शिव परिवार संग नाग देवता की पूजा करने से साधक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी. साथ ही नाग देवता का आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।

सिद्ध और साध्य योग

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नाग पंचमी पर सिद्ध योग का भी संयोग बना रहा है। सिद्ध योग दोपहर 1:46 तक रहेगा। इस दौरान भगवान शिव की पूजा आराधना करने से सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। इसके बाद साध्य योग का निर्माण हो रहा है।

बालव करण योग

ज्योतिषाचार्य डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नाग पंचमी पर बल और बालव करण योग का योग का भी निर्माण हो रहा है। इस दौरान भगवान शिव और नाग देवता की पूजा करने से सभी संकट दूर होते हैं और उत्तम फल की प्राप्ति होती है।

नागपंचमी तिथि

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि इस साल सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि 9 अगस्त 2024 को पड़ रही है। हिंदू पंचांग के अनुसार सावन महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि की शुरुआत 09 अगस्त को मध्य रात्रि 12:36 मिनट पर होगी। वहीं, इसका समापन 10 अगस्त को देर रात्रि 03: 14 मिनट पर होगा। उदयातिथि के आधार पर नाग पंचमी का पर्व 09 अगस्त को मनाया जाएगा। इसके अलावा नाग पंचमी की पूजा सुबह 05:47 मिनट से लेकर 08:27 मिनट के बीच होगी। वैदिक पंचांग के अनुसार अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12 बजे से लेकर दोपहर 12:53 मिनट तक रहेगा। इसके साथ ही अमृत काल रात्रि 07:57 मिनट से 09:45 मिनट तक रहेगा।

कालसर्प दोष

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि कालसर्प दोष दूर करने के लिए नागपंचमी पर नागों की पूजा को काफी लाभकारी माना जाता है। कालसर्प दोष दूर करने के लिए महामृत्युंजय सर्पगायत्री जाप अथवा त्रंबकेश्वर आदि तीर्थ स्थानों में सर्प पूजा का विधान है। ज्योतिषों का कहना है कि सर्प दोष से पीड़ित व्यक्ति नाग पंचमी के दिन चांदी अथवा तांबे का सांप का जोड़ा लेकर शिवलिंग पर चढ़ाएं। ॐ नमः शिवाय अथवा महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें। इसके साथ ही सर्प गायत्री का जाप करें तो कालसर्प दोष राहत मिलती है।

नागपंचमी महत्व

भविष्यवक्ता एवं कुंडली विश्लेषक डॉ अनीष व्यास ने बताया कि नागपंचमी का त्योहार हिंदू धर्म में काफी मान्य है। इस दिन पूजा करने से सांप या नागों से परिवार की सुरक्षा होती है। साथ ही उन्हें लेकर मन का भय समाप्त हो जाता है। जिस जातक की कुंडली में कालसर्प दोष है, उन्हें इसके कारण कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके लिए नागपंचमी के दिन पूजन करने से लाभ मिलता है।

नाग पंचमी, 09 अगस्त 2024 शुक्रवार

नागपंचमी श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाती है। अबकी बार नागपंचमी 09 अगस्त, शुक्रवार को मनाई जाएगी। इस दिन भगवान शिव के गण माने जाने वाले नाग देवता की पूजा की जाती है।

नागपंचमी पर पूजा का शुभ मुहूर्त-: उदया तिथि के अनुसार इस बार नाग पंचमी 09 अगस्त 2024, शुक्रवार को मनाई जाएगी। नागपंचमी के दिन नागदेवता की पूजा पूरे दिन कभी भी की जा सकती है।

पूजा का सबसे शुभ मुहूर्त 09 अगस्त को सुबह 05:47 से 8:27 तक रहेगा। दोपहर अभिजीत मुहूर्त में 12:27 से दोपहर 01:00 तक का समय भी पूजा के लिए शुभ है। इसके बाद प्रदोष काल में भी पूजा का शुभ महूर्त शाम को 06:33 मिनट से रात को 08:20 मिनट तक रहेगा।।

नागपंचमी पर बन रहे हैं ये शुभ योग-: नागपंचमी के दिन हस्त नक्षत्र के शुभ संयोग में शिव वास योग, साध्य योग और सिद्ध योग का शुभ संयोग बन रहा है। इन शुभ योग में शिवजी की पूजा करने से भोलेबाबा शीघ्र की आपकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं और शीघ्र ही आपको पूजा का शुभ फल मिलता है।।

नागपंचमी विशेष-: नाग पंचमी का दिन नाग देवता की उपासना का दिन है अतः इस दिन आप मंदिर में शिव पर छत्र के रूप में विराजमान नाग देवता की पूजा कर सकते हैं।

पूजा में बेलपत्र, पुष्प, तिल, अक्षत, चंदन, भारतीय देसी गाय का कच्चा दूध, और गंगाजल इत्यादि नाग देवता पर चढ़ा सकते हैं।

जिन लोगों की जन्म कुंडली में कालसर्प दोष है वे लोग भी इस दिन नाग देवताओं की पूजा उपासना व मंत्र जप इत्यादि करके कुंडली में विद्यमान कालसर्प दोष के दुष्प्रभाव को कम कर सकते हैं।

नागपंचमी के शुभ अवसर पर रुद्राभिषेक करना बेहद शुभ माना जाता है। इस दिन नाग देवता की एवं भगवान शिव की विधिवत पूजा- उपासना करना लाभकारी रहेगा और जन्म कुंडली में विद्यमान कालसर्प व राहु- केतु से उत्पन्न दोष का भी निदान होता है।।

सदियों से चली आ रही है खाटू श्याम को निशान अर्पित करने की परंपरा, जानिए वजहकी परंपरा, जानिए वजह

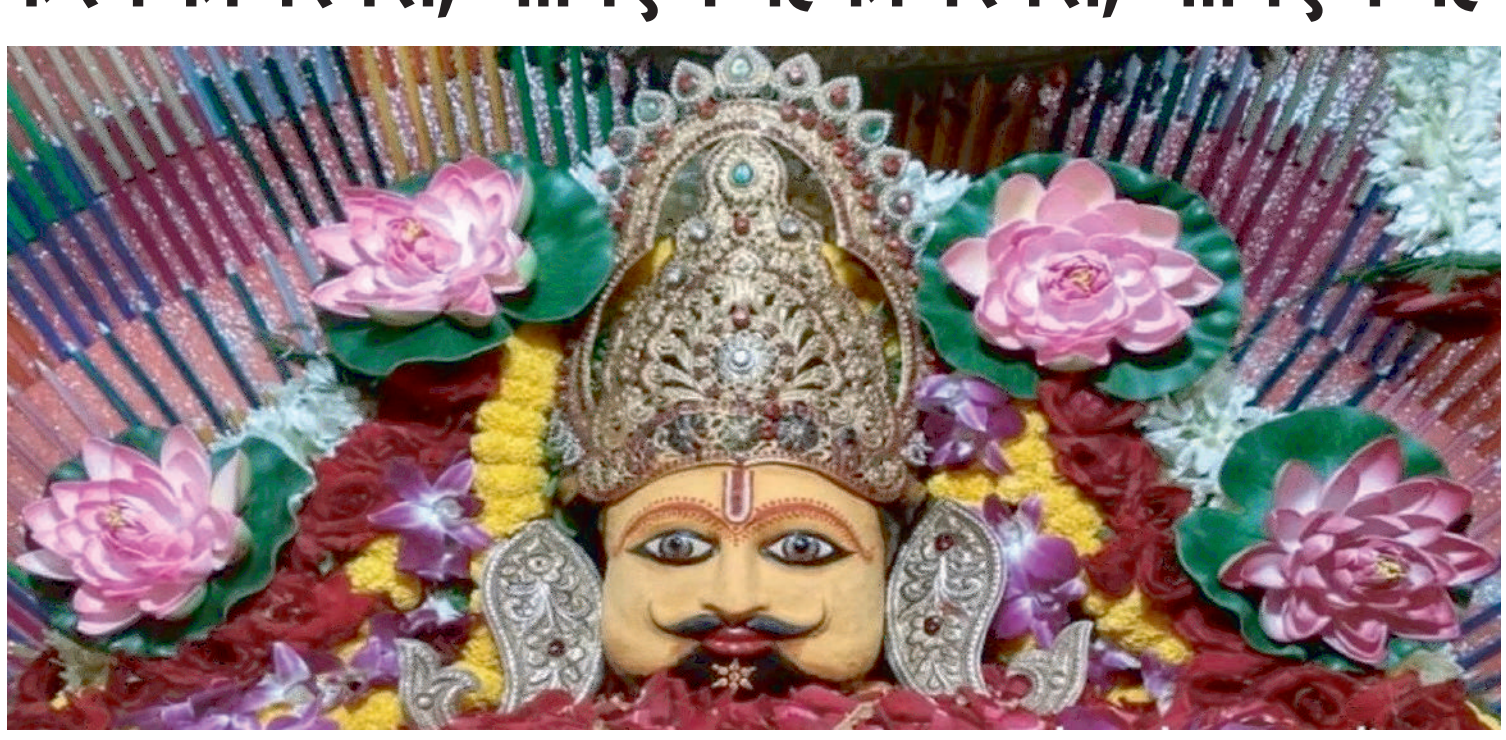

सनातन धर्म में ध्वज को विजय का प्रतीक माना जाता है। वहीं खाटू श्याम को निशान अर्पित करने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। ऐसे में आज भी यह परंपरा निभाई जा रही है। निशान को ध्वज और झंडा कहा जाता है।

राजस्थान के सीकर जिले में स्थित खाटू श्याम मंदिर देशभर में फेमस है। बता दें कि इस मंदिर में श्रीकृष्ण के साथ पांडव भीम के पोते घटोत्कच्छ के बेटे की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। रोजाना हजारों-लाखों की संख्या में भक्त खाटू श्याम के दर्शन के लिए सीकर पहुंचते हैं। जो भी भक्त बाबा श्याम के दर्शन के लिए जाते हैं, उनमें से ज्यादातर भक्त अपने साथ खाटू श्याम का ध्वज लेकर जाते हैं। इस ध्वज को निशान कहा जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि भक्त बाबा खाटू श्याम को निशान क्यों अर्पित करते हैं।

जानिए क्या है वजह

सनातन धर्म में ध्वज को विजय का प्रतीक माना जाता है। वहीं खाटू श्याम को निशान अर्पित करने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। ऐसे में आज भी यह परंपरा निभाई जा रही है। निशान को ध्वज और झंडा कहा जाता है। इस निशान को खाटू श्याम द्वारा दिए गए बलिदान और दान का प्रतीक माना जाता है। क्योंकि खाटू श्याम ने श्रीकृष्ण के कहने पर धर्म की जीत के लिए अपना शीश समर्पित कर दिया था। ऐसे में युद्ध की जीत का पूरा श्रेय श्रीकृष्ण को दिया था।

कैसा होता है ये निशान

बता दें खाटू श्याम को जो निशान अर्पित किया जाता है, वह नारंगी, लाल और केसरिया रंग का होता है। इसके अलावा इसमें श्रीकृष्ण, खाटू श्याम की फोटो और मोर पंख होता है। मान्यता के मुताबाकि जो भी भक्त खाटू श्याम पर इस निशान को अर्पित करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती है। वहीं कुछ लोग मनोकामना पूरी होने पर खाटू श्याम को निशान अर्पित करते हैं।

कौन हैं खाटू श्याम

बर्बरीक को खाटू श्याम के नाम से जाना जाता है। वह भीम के पोते और घटोत्कच्छ के पुत्र हैं। उनका संबंध महाभारत काल से है। बर्बरीक बेहद ताकतवर थे, ऐसे में श्रीकृष्ण ने उनसे प्रभावित होकर उनके कलियुग में अपने नाम से पूजे जाने का आशीष दिया था।

वेट लॉस के साथ हड्डियों के लिए भी फायदेमंद है ये सब्जी, आप भी करें सेवन

हालांकि यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि इसकी मशरूम की सब्जी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती है। वेट लॉस करना हो या अपनी हड्डियों को मजबूती देना चाहते हैं, तो मशरूम आपके लिए एक बेहतर खाद्य पदार्थ साबित हो सकता है।

मशरूम ना तो फल है और ना ही यह सब्जी है। बल्कि यह खाई जाने वाली एक फंगस है। मशरूम दिखने में एकदम छतरी जैसा होता है। वहीं लोग इसको खाना बहुत पसंद करते हैं। मशरूम की सब्जी बनाकर खाई जाती है। हालांकि यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है कि इसकी मशरूम की सब्जी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होती है।

अगर आप वेट लॉस करना चाहते हैं और अपनी हड्डियों को मजबूती देना चाहते हैं, तो मशरूम आपके लिए एक बेहतर खाद्य पदार्थ साबित हो सकता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको मशरूम खाने के फायदे के बारे में बताने जा रहे हैं।

मशरूम की सब्जी

मशरूम की सब्जी का सेवन करने से आपकी हड्डियों को मजबूती प्राप्त होती है। मशरूम विटामिन डी का सबसे अच्छा स्त्रोत माना जाता है। विटामिन डी हड्डियों को मजबूत बनाता है और इसमें मौजूद कैल्शियम के अवशोषण की मदद करता है। साथ ही इसमें विटामिन B12 पाया जाता है। यह भी हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण होता है और बोन डेंसिटी को बनाए रखने में सहायता मिलती है। मशरूम में फॉस्फोरस और कॉपर जैसे जरूरी मिनरल्स पाए जाते हैं। इससे हड्डियों की संरचना को मजबूती मिलती है और यह हड्डियों के स्वास्थ्य में सुधार करने में सहायक होता है।

वेट लॉस में फायदेमंद

अगर आप वेट लॉस करना चाहते हैं, तो आप मशरूम की सब्जी अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। हालांकि इसको कम तेल-मसाले में बनाना चाहिए। इसमें घुलनशील फाइबर पाया जाता है। जो आपके पेट को लंबे समय तक भरा रखता है। इससे आप एक्स्ट्रा कैलोरी का सेवन करने से बच जाते हैं। साथ ही यह आपके मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करने में सहायता करता है। इस तरह से यह वेट लॉस में फायदेमंद होता है।

कौन सा समाचार सुनकर भगवान शंकर भयंकर क्रोध से भर गये

वीरभद्र ने, प्रजापति दक्ष की गर्दन पर तलवार से प्राणघातक प्रहार किया। वीरभद्र के इस प्रहार से प्रजापति की मृत्यु निश्चित थी। किंतु दक्ष की मुत्यु नहीं हो पाती। तब वीरभद्र दक्ष की गर्दन को मरोड़ कर तोड़ देते हैं, और उसके सिर को धधकते यज्ञ कुण्ड़ में डाल देते हैं।

प्रजापति दक्ष ने यज्ञ में जो किया, वह निःसंदह सम्मान योग्य नहीं था। संसार में कोई भी प्रजापति दक्ष के इस कृत्य का समर्थन नहीं करेगा। लेकिन कुछ पाप कर्म ऐसे होते हैं, जिनको अविलम्भ दण्ड़ के माध्यम से निपटाना आवश्यक होता है। भगवान शंकर का भी यही मत था।

श्रीसती जी तो दक्ष के यज्ञ में अपनी देह व भविष्य के सुंदर स्वप्नों को स्वाह कर ही चुकी थी, साथ में भगवान शंकर के सम्मान की भी रक्षा नहीं कर पाई थी। जो भी हो, वे श्रेष्ठ भक्त तो थी ही। जिस कारण भगवान शंकर के हृदय में उनके प्रति अतिअंत प्रेम व भाव था। श्रीनारद जी ने जैसे ही भगवान शंकर से श्रीसती जी के देहासन का समाचार दिया, तो भगवान शंकर भयंकर क्रोध से भर गये। उन्होंने उसी क्षण अपनी जटायों से एक भाग निकाला, और उसे धरा पर पटक दिया। जिसमें से एक बहुत ही भयंकर शिव गण की उत्पत्ति होती है। उनके लाल नेत्र हैं। विशालकाय रुप है। और उनका कोई भी सामना नहीं कर पा रहा था। भगवान शंकर उन्हें वीरभद्र ने के नाम से पुकारते हैं। प्रगट होते ही वीरभद्र दोनों हाथ जोड़ कर कहते हैं, 'मेरे लिए क्या आज्ञा है प्रभु?'

भगवान शंकर कहते हैं, 'हे वीरभद्र मेरी आज्ञा स्पष्ट है। जाकर प्रजापति का यज्ञ विध्वंस कर दो। सभी सभासदों को उचित दण्ड दो। रही बात प्रजापति दक्ष की, तो उसे प्राण दण्ड देकर ही मेरे समक्ष प्रस्तुत होना।'

भगवान शंकर की आज्ञा सुनकर उसी समय वीरभद्र, प्रजापति दक्ष के यज्ञ में जा पहुँचे। वहाँ जाते ही उन्होंने यज्ञकुण्ड को उजाड़ दिया। उजड़ी यज्ञशाला के बाँस के डण्डों से वहाँ उपस्थित पुजारियों को पीट डाला, और अंततः मुख्य चार लोगों को पकड़ लिया। पहले प्रजापति दक्ष, दूसरे यज्ञ करवाने वाले आचार्य भृगु जी, एवं बाकी दो पूषा और भग थे, जो कि भगवान शंकर के विरोधी थे।

वीरभद्र ने सबसे पहले आचार्य को दण्ड दिया। उन्होंने उसकी दाड़ी व मूछों के बालों को उखाड़ दिया। कारण कि आचार्य भृगु अपनी दाड़ी व मूछों हाथ मारते हुये भगवान शंकर को सजा देने के लिए इशारे कर रहे थे। इसके पश्चात वीरभद्र ने पूषा के दाँत निकाल दिये। क्योंकि वह भी भगवान शंकर के अपमान पर जोर-जोर से हँस रहा था।

भग भी कैसे बच पाता? वीरभद्र ने उसकी आँखें निकाल ली। क्योंकि वह भी आँखों के इशारों से कह रहा था, कि भगवान शंकर का अपमान करो।

इसके पश्चात वीरभद्र ने, प्रजापति दक्ष की गर्दन पर तलवार से प्राणघातक प्रहार किया। वीरभद्र के इस प्रहार से प्रजापति की मृत्यु निश्चित थी। किंतु दक्ष की मुत्यु नहीं हो पाती। तब वीरभद्र दक्ष की गर्दन को मरोड़ कर तोड़ देते हैं, और उसके सिर को धधकते यज्ञ कुण्ड़ में डाल देते हैं। जिससें दक्ष का सिर भस्म हो जाता है। यह समाचार संपूर्ण जगत में वन की आग की तरह फैल जाता है। ब्रह्मा जी को जब यह सूचना मिलती है, तो वे चिंतित हो जाते हैं। क्योंकि यज्ञ विध्वंस होना सृष्टि के उत्थान के लिए ठीक नहीं था। प्रजापति दक्ष कैसा भी था, किंतु यज्ञ की मर्यादा भंग नहीं होनी चाहिए थी। इसी निमित ब्रह्मा जी अन्य देवताओं को लेकर शिवजी के पास पहुँचे। और उन्हें प्रणाम किया। भगवान शंकर ने जब ब्रह्मा जी को सामने पाया, तो वे दोनों हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। बोले कि हे पितामाह! आप हमें हाथ मत जोड़िए! आप तो बस आदेश कीजिए।

तब ब्रह्मा जी ने कहा, कि हे महादेव! आपकी महिमा अपार है। आपका संपूर्ण संसार में कोई सानी नहीं है। आप दया के सागर हैं। किंतु यज्ञ की रक्षा के लिए आपका खड़े होना अति आवश्यक है। यज्ञ के यजमान प्रजापति दक्ष को आपके गण वीरभद्र ने मुत्यु के घाट उतार दिया है। यज्ञ संपूर्ण हो, इसके लिए उसका जीवित होना अनिवार्य है। तो कृप्या आप उसे जीवित कर दें।

भगवान शंकर ने सोचा, कि ब्रह्मा जी का आदेश टाला नहीं जा सकता। उधर नंदी जी ने भी प्रजापति दक्ष को शाप दे रखा है, वह अगले जन्म में बकरा बनेगा। तो अगले जन्म में क्यों, क्यों न उसे इसी जन्म में बकरा बना दिया जाये।

तब भगवान शंकर ने आदेश दिया, कि बकरे का सिर काट कर लाया जाये। शिवगणों ने ऐसा ही किया। वे बकरे का सिर काट कर लाये, और भगवान शंकर ने उसे प्रजापति दक्ष के धड़ पर लगा दिया। तब कहीं जाकर प्रजापति दक्ष की अकड़ टूटी, और उसने भगवान शंकर की स्तुति की। आचार्य भृगु की दाड़ी मूँछ ही लौटा दी गई, और पूषा के दाँत भी उगा दिये गये। भग ने भी प्रार्थना की, कि उसका भी दुख हरा जाये। तब उसकी भी आँखें वापस कर दी

दिल्ली के लोगों को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं को उठाने के लिए उपराज्यपाल से मुलाकात

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने आज राज निवास में उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना से मुलाकात की और लोगों को प्रभावित करने वाले कुछ ज्वलंत मुद्दों पर एक घंटे तक चर्चा की और उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। देवेन्द्र यादव ने कहा कि उपराज्यपाल ने कांग्रेस नेताओं द्वारा उठाए गए मुद्दों को धैर्यपूर्वक सुना और उन्हें सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

देवेन्द्र यादव के अलावा प्रतिनिधिमंडल में दिल्ली के पूर्व मंत्री मंगत राम सिंघल, संचार विभाग के अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक अनिल भारद्वाज, पूर्व विधायक जयकिशन, पूर्व मेयर फरहाद सूरी शामिल थे। देवेन्द्र यादव ने कहा कि कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने एलजी वी.के.सक्सेना को बताया कि उच्च न्यायालय द्वारा डेयरियों को स्थानांतरित करने तथा अनाधिकृत निर्माणों को ध्वस्त करने के आदेश के बाद राजधानी के भलस्वा तथा अन्य डेयरी मालिकों पर विध्वंस की तलवार लटक रही है। एलजी सक्सेना ने सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया, क्योंकि डेयरी मालिक अपने पशुओं को किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित करने के लिए तैयार हैं, लेकिन यदि डेयरी स्थल पर निर्माणों को ध्वस्त किया जाता है तो वे वैकल्पिक स्थान चाहते हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने यह भी मांग की है कि राजिंदर नगर में ट्यूशन सेंटर के बेसमेंट में जलभराव के कारण सिविल सेवा के छात्रों की मौत और पूर्वी दिल्ली के गाजीपुर में दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की लापरवाही और गैरजिम्मेदारी के कारण मां और बच्चे की मौत की सीबीआई जांच में तेजी लाई जाए और इस त्रासदी के लिए जिम्मेदार असली दोषियों को सजा दिलाई जाए। उन्होंने कहा कि राजिंदर नगर त्रासदी की जांच केवल उस क्षेत्र तक सीमित न रहकर अन्य क्षेत्रों तक विस्तारित की जानी चाहिए और दोषियों की जिम्मेदारी तय कर उन्हें दंडित किया जाना चाहिए।

अगले सप्ताह तक बाकी 30 और वाटर कूलर विधानसभा क्षेत्र के लोगों को उपलब्ध करा दिए जाएंगे

सुषमा रानी , नई दिल्ली, दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं पटपड़गंज से विधायक मनीष सिसोदिया जेल में होने होने बाद भी अपने क्षेत्र की जनता को सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए बेहद फिक्रमंद हैं। मनीष सिसोदिया के निर्देश पर एमएलए फंड से उनकी टीम के सदस्यों द्वारा क्षेत्र में 50 वाटर कूलर लगाए जाएंगे। अभी तक टीम मनीष के सदस्यों द्वारा 20 वाटर कूलर लगा दिए हैं, जबकि 30 और वाटर कूलर अगले सप्ताह तक क्षेत्र की जनता को उपलब्ध करा दिए जाएंगे। दरअसल, पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र के लोगों की ओर से वाटर कूलर की मांग की जा रही थी। वाटर कूलर न होने से लोग परेशानी का सामना कर रहे हैं। पूर्व मंत्री मनीष सिसोदिया को क्षेत्र की जनता की मांग से अवगत कराया गया। इसके बाद मनीष सिसोदिया ने अपने क्षेत्र के लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए एमएलए फंड से अपनी टीम को 50 वाटर कूलर मुहैया कराने का निर्देश दिया। इसके बाद टीम मनीष के सदस्यों ने लोगों की जरूरतों के अनुसार पटपड़गंज विधानसभा के विभिन्न इलाकों में वाटर कूलर लगवाने का काम शुरू कर दिया है। टीम मनीष के सदस्यों ने अब तक विभिन्न इलाकों में 20 वाटर कूलर लगा भी दिए हैं, जबकि 30 और वाटर कूलर अगले सप्ताह तक लगा दिए जाएंगे। इस पर तेजी से काम चल रहा है। बता दें कि वर्तमान में मनीष सिसोदिया को साजिश के तहत एक फर्जी मामले में जेल रखा गया है। जेल में रहने के बावजूद वो अपने क्षेत्र की जनता की बुनियादी सुविधाओं को लेकर बेहद फिक्रमंद हैं। लिहाजा, क्षेत्र की जनता से आई मांग के अनुसार, वो अपने एमएलए फंड का इस्तेमाल करने के लिए कोर्ट से अनुमति लेते हैं और टीम मनीष के सदस्यों द्वारा उस फंड से क्षेत्र की जनता को सुविधाएं मुहैया कराई जाती है।

पत्रकार वाईएस गिल ने कनकंडे स्मृति सभा का किया आयोजन

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली के प्रेस क्लब ऑफ इंडिया सभागार में नव सर्वहारा सांस्कृतिक मंच की ओर से पत्रकार वाईएस गिल ने कामरेड दयानन्द कनकण्डे स्मृति अभिवादन सभा का आयोजन किया गया। सभा का संचालन युवा भारत के संस्थापक कामरेड शशि सोनवने ने किया। शशि सोनवणे ने बताया कि दयानन्द कनकंडे (38) का देहांत गत 25 जून को पूणे में अकस्मात हो गया था। दयानंद कनकण्डे ने अपने जीवन में साहित्यिक तथा साहित्येतर योगदान दिया। वह मराठी और हिंदी ही नहीं अन्य भाषाओ के बीच पुल का काम करने की लंबी योजना रखते थे। जिनके निधन से हम सभी हतप्रभ है। का.शिवमंगल सिद्धांतकर ने साहित्य और राजनीतिक के संबंधो का विश्लेषण करते हुए कहा कि साहित्य राजनीति मशीनरी को गतिशील करने में मोबाइल का काम करते है। जो वर्तमान में आर्टिफिशल इंटेलीजेंस के आ जाने के बाद साहित्य और मशीनरी की भूमिका में तब्दील हो गया है।आज आर्टिफिशल इंटेलीजेंस के शिखर पर पहुंचते हुए मानव हर हाथ को आपन हाईमर बना चुका है।जो विनाशकारी की जगह कल्याणकारी बन सकता है। उन्होने कहा कि इस दिशा में मोबाइल प्रयोग से कुशलता प्राप्त करने की ओर कई साहित्यकार भी सक्रिय है। जिनमें दयानन्द कनकंडे भी प्रारंभिक रूप से प्रवेश कर चुके है।इस तरह अकस्मात उनका देहावसान एक सशक्त हस्ताक्षर का शुरू में ही अंत होना है।इसके अलावा अन्य वक्ताओ ने भी कनकंडे की बावत खूब खूबियों का वर्णन किया।उनके साथ गुजारे वक्त की यादों को साझा किया।अन्य वक्ताओ में कामरेड नरेश गुप्ता, डॉ.अरूण त्रिपाठी, पत्रकार संदीप राव, एडवोकेट अरूण मांझी, श्री नाथ सिंह, रमाशंकर, कथाकार ज्ञान चंद बागडी, कलमकार राजव्रत आर्य, का.उमाकांत, पत्रकार सर्वेश, शशि शर्मा, उदय नारायण जवाहर लाल सर्वहारा, पूणे से संजय, झारखंड से उमेश और रमेश आदि विशेषतौर पर उपस्थित थे। अंत में का. नरेंद्र ने सभा में उपस्थित सभी नेताओ, साहित्यकारों, लेखक, मजदूर नेताओ का आभार व्यक्त किया।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में युवा बेरोजगारों की दर दुनिया में सबसे अधिक है

सुषमा रानी

नई दिल्ली। अगस्त आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सांसद संजय सिंह द्वारा देश में बेरोजगारी को लेकर पूछे गए प्रश्न के जवाब में केंद्र की मोदी सरकार ने भ्रामक आंकड़े उपलब्ध कराए हैं। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की ओर से मिले जवाब में देश भर में कुल बेरोगारों की संख्या, शिक्षा स्तर के अधार पर बेरोजगारी दर, सरकारी नौकरियों में रिक्त पद और ठेका आधारित भर्तियों के प्रतिशत का आंकड़ा छिपा दिया गया है। जबकि अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट कहती है कि भारत में युवा बेरोजगारों की दर दुनिया में सबसे अधिक है। वहीं, नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस के पुराने आंकड़े भी सरकार के आंकड़ों से बिल्कुल अलग हैं। बेरोजगारी बढ़ने से देश की अर्थव्यवस्था व समाज पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। इससे निपटने के लिए केंद्र सरकार को तत्काल कदम उठाना चाहिए।

संसद के बजट सत्र में ''आप'' सांसद संजय सिंह द्वारा देश में व्यापक बेरोजगारी के संदर्भ में पूछे गए अतारांकित प्रश्न संख्या 1247 के जवाब में सरकार से मिले बेरोजगारी के आंकड़े गंभीर खामियों से ग्रस्त हैं। सांसद संजय सिंह के प्रश्नों के जवाब में श्रम एवं रोजगार मंत्रालय द्वारा बेरोजगारी के आंकड़ों को छुपाकर केंद्र सरकार की ओर से युवाओं के साथ किए गए धोखे और अन्याय को सत्यापित करता है।

केंद्र सरकार ने बेरोजगारी की वास्तविक स्थिति को छिपाने के लिए जानबूझ कर महत्वपूर्ण आंकड़े छुपाए हैं। कुल बेरोजगारों की संख्या, शिक्षा स्तर के आधार पर बेरोजगारी दर, सरकारी नौकरियों में रिक्त पदों की संख्या और ठेका आधारित भर्तियों का प्रतिशत जैसी अहम जानकारी जनता से छुपाई गई है। उदाहरण के तौर पर हाल ही में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में बेरोजगारी की दर सरकारी आंकड़ों से कहीं अधिक है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में युवा बेरोजगारी की दर दुनिया में सबसे अधिक है। इसके अलावा, नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस (एनएसएसओ) के पुराने आंकड़े भी सरकारी आंकड़ों से काफी भिन्न हैं, जो सरकार द्वारा जारी किए गए आंकड़ों की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हैं।

देश में बेरोजगारी एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है और इसके समाधान के लिए सटीक आंकड़ों की आवश्यकता होती है। सरकार को चाहिए कि वह बेरोजगारी के वास्तविक आंकड़े सार्वजनिक करे, ताकि इस समस्या से निपटने के लिए प्रभावी नीतियां बनाई जा सकें। बेरोजगारी के बढ़ते स्तर से देश की अर्थव्यवस्था और समाज पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। सरकार को तत्काल कदम उठाकर बेरोजगारी की समस्या से निपटना चाहिए।

वैष्णों माता देवी मंदिर में हरियाली तीज उत्सव 5 से 8 अगस्त मनाया गया

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

महिलाए चाहे किसी भी उम्र की हो सभी को श्रावणी तीज का इंतजार बेसब्री से रहता है।क्योंकि इस पर्व के दौरान उनका जीवन एक बार फिर उमंगों से भर जाता है।नारियों के समूहों द्वारा झूलों पर झूलते हुए सामूहिक गीत गाए जाते है। इसी कडी में रोहिणी, विजय विहार फेज-2 ए- ब्लॉक में RWA के सानिध्य में मंदिर प्रांगण में हरियाली झूला तीज उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय महिलाए, युवती, बच्चों ने जमकर झीलों का लुत्फ उठाया। इसके अलावा ढोल नगाओं की थाप पर महिलाओ ने उमंग से सराबोर हो कर खूब नृत्य किया। मंदिर के महंत पंडित मुरारी लाल ने बताया कि मंदिर व RWA की ओर से संयुक्त कार्यक्रम का आयोजन 5 से 8 अगस्त तक आयोजित किया गया। इस दौरान राधा- कृष्ण समेत भोले बाबा के भजन कीर्तन किए गए। RWA के जनरल सेकेट्री सूरज दत्त ने बताया कि चार दिनों तक चले हरियाली तीज उत्सव को बहुत ही उत्साह और उमंग से मनाया गया। उन्होने कहा कि हरियाली तीज झूला उत्सव को प्रभु के आशीर्वाद से हर साल मनाया जाएगा। इस मौके पर कार्यक्रम को सफल बनाने में दयानंद भारद्वाज, सूरज दत्त, राजेश सांवरिया, सोनू कश्यप, विनोद पराशर मालती देवी, रेनू मित्तल, मंजू कपूर, सरोज शर्मा, सुनीता भारद्वाज, संगीता ढींगरा समेत अन्य महिलाए भी शामिल थी।जिनके सान्निध्य में भव्य कार्यक्रम का सफल आयोजन हो पाया। सभी का RWA एवं मंदिर मंहत की ओर से आभार जताया गया।

हमनें अपने स्कूलों को स्मार्ट बोर्ड, बढ़िया लैब-लाइब्रेरी, स्पोर्ट्स फैसिलिटीज़ सहित तमाम सुविधाओं से लैस किया

सुषमा रानी

नई दिल्ली। केजरीवाल सरकार द्वारा अपने स्कूलों में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने का काम जारी है। सरकार द्वारा दिल्ली भर में बड़े स्तर पर नए स्कूल और मौजूदा स्कूलों में नए क्लास रूम्स और अकेडमिक ब्लॉक्स बनवाए जा रहे है। इस विषय में प्रेस कॉन्फ्रेंस के ज़रिए साझा करते हुए शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, तमाम मुश्किलों के बावजूद केजरीवाल सरकार के स्कूलों में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने का काम जारी है। इस दिशा में वर्तमान में दिल्ली सरकार 14 नए स्कूल बनवा रही है।

उन्होंने कहा कि, आज़ादी के बाद से 2014 तक कई सरकारें आई-गई लेकिन दिल्ली के स्कूलों में मात्र 24,000 कमरे ही बनें।

इस सपने को पूरा करते हुए 2015 से 2024 तक मात्र 10 सालों में केजरीवाल सरकार ने सरकारी स्कूलों में 22,711 कमरे बनवाए। उन्होंने कहा कि, ₹हमनें अपने स्कूलों को स्मार्ट बोर्ड, बढ़िया लैब-लाइब्रेरी, स्पोर्ट्स फैसिलिटीज़, शानदार डेस्क सहित तमाम सुविधाओं से लैस किया और आज दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर पा रहे है।₹

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, जिन स्कूलों में क्लासरूम की कमी थी, वहाँ नये क्लासरूम, अकेडमिक ब्लॉक बनाए जा रहे है। वर्तमान में दिल्ली भर में केजरीवाल सरकार के स्कूलों में 1541 नये कमरे बन रहे है। उन्होंने कहा कि, भाजपा शासित केंद्र सरकार मुख्यमंत्री केजरीवाल की तरह सरकारी स्कूलों में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं दे सकते इसलिए उन्हें झूठे केस में जेल में डाल दिया। लेकिन भाजपा ने चाहे मुख्यमंत्री केजरीवाल को, मनीष सिसोदिया को जेल में डाल दिया हो

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, केजरीवाल की सरकार के लिए बच्चों की शिक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता रही है। पूरे देश में अगर एक इकलौती सरकार है जो अपने बजट का 25% हिस्सा शिक्षा पर लगती है तो वो अरविंद केजरीवाल की सरकार है।

देश के सरकारी स्कूलों का हाल किसी से छुपा नहीं है।बच्चों के पढ़ने के लिए क्लासरूम नहीं, टेबल-कुर्सी नहीं है, डेस्क नहीं है, बच्चे टाट-पट्टी पर बैठते है। बरसात के मौसम में स्कूल की छतों से पानी टपकता है। शौचालय नहीं होते, बिजली नहीं होती। उन्होंने कहा कि, दिल्ली के सरकारी स्कूलों का भी 2015 से पहले यही हाल था। दिल्ली में क्लासरूम की कमी थी, क्लासरूम में डेस्क नहीं होते थे, ब्लैक-बोर्ड टूटे होते थे।

दिल्ली के कई हिस्सों में ख़ासतौर पर घनी आबादी वाले क्षेत्रों में कई स्कूल ऐसे थे, जहां पर एक क्लासरूम में 150 तक बच्चे पढ़ते थे। ऐसी ठसाठस भरे क्लास में बच्चों को क्वालिटी शिक्षा देना नामुमकिन था। लेकिन दिल्ली के हर बच्चे को चाहे वो अमीर परिवार से हो या ग़रीब परिवार से हो उसे वर्ल्ड क्लास शिक्षा देंगे। प्राइवेट स्कूलों जैसी शिक्षा सरकारी स्कूल में देंगे।

इस विज़न को पूरा करने के लिए 2015 से दिल्ली के सरकारी स्कूलों के इंड्रास्ट्रक्चर को शानदार बनाने की क़वायद शुरू हुई। 2015 में दिल्ली के सरकारी स्कूलों में कुल 24,000 कमरे थे यानी 1947 में देश की आज़ादी के बाद से 2014 तक इतनी सरकारें आई लेकिन स्कूलों में सिर्फ़ 24000 कमरे ही बनवा सकी।

दूसरी तरफ़ अरविंद केजरीवाल की सरकार ने 2015 से 2024 तक मात्र 10 सालों में दिल्ली के सरकारी स्कूलों में 22,711 कमरे बनवाये और यहाँ स्मार्ट बोर्ड, बढ़िया लैब-लाइब्रेरी, स्पोर्ट्स फैसिलिटीज़ है, शानदार डेस्क है। आज दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर पा रहे है।

सरकारी स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने की ये श्रृंखला अभी थमी नहीं है और युद्धस्तर पर जारी है। वर्तमान में दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में 14 नए स्कूल बन रहे है। जिन स्कूलों में क्लासरूम की कमी थी, वहाँ नये क्लासरूम, अकेडमिक ब्लॉक बनाए जा रहे है। वर्तमान में दिल्ली सरकार के स्कूलों में 1541 नए कमरे बन रहे है।

ये दिल्ली के हर हिस्से में बन रहे है। चाहे रोहिणी, सुंदर नगरी, मुस्तफ़ाबाद, ईस्ट विनोद नगर, द्वारका, मयूर विहार, झरोड़ा कलाँ, किराड़ी, सीमापुरी, मैदान गढ़ी, रघुवीर नगर, टैगोर गार्डन, आया नगर दिल्ली के हर हिस्से में इंफ्रास्ट्रक्चर का एक्सपेंशन जारी है। उन्होंने कहा कि, केजरीवाल की सरकार दिल्ली के बच्चों को हाई-क्वालिटी एजुकेशन देने के लिए प्रतिबद्ध है।

स्कूल में प्रिरी नर्सरी के बच्चौं में फैली दानों और मुंह में छालों की बीमारी, पेरेंट्स दहशत में

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

स्कूलों की लापरवाही के चलते प्रिरी नर्सरी के छोटे बच्चों में अजीब सी मुंह और टांगों समेत पूरे बदन में दाने निकलने की बिमारी ने पैर पसार लिए है। इसको (HFMD) के प्रकोप में देखा जा रहा है। छोटे बच्चौ के मुंह में दाने होने से मुंह पर सूजन देखी जा रही है। इससे बच्चा खाने पीने तक के लिए मुंह नहीं खोल पा रहा है। इस बावत जब बच्चो को क्लिनिक में दिखाया गया, तो डाक्टर इसे मुंह का अल्सर बता रहे है। ये बिमारी छूत टाइप की तरह एक से दूसरे बच्चे में तेजी से फैल रही है। पेरेंट्स का आरोप है कि स्कूल की ओर से बच्चौं के प्रति स्वचछता और उचित देखभाल का अभाव माना जा रहा है। उनका कहना है कि एक -एक क्लास में 40-40 बच्चौं को साथ -साथ बिठाया जा रहा है। जिससे उमस-और गर्मी में बच्चौ के बीच हवा का उचित वातावरण नहीं हो पा रहा है। पेरेंट्स ने निजी स्कूल संचालको से लिखित में अपील की है कि वह स्वच्छता प्रोटोकॉल की समीक्षा करें। साथ ही सुनिश्चित करें कि बच्चौं को नियमित हाथ धोने के अलावा खिलौने की सिनेटाइजेशन के साथ कक्षाओं में मुस्तैदी और सख्ती से सफाई कराई जाए। इसके अलावा स्टाफ,और छात्रों को हाइजीन के प्रति स्टाफ को प्रशिक्षण देना और पेरेंट्स को भी उचित उपायों के लिए सूचित करना चाहिए। पेरेंट्स ने स्कूल संचालको से अपील की है कि वह नियमित स्वास्थ्य जांच शुरू करें।स्कूल में परमानेंट डाक्टर की न्यूक्ति की जाए। जो बच्चौ की समय -समय पर स्वास्थ्य जांच कर सके। इस बावत पेरेंट्स ने बाकायदा निजी स्कूल संचालको को लिखित में बच्चौ को इस गंभीर होती जा रही बिमारी, से स्वास्थ्य रक्षा के मद्देनजर तात्कालिक कदम उठाकर पेरेंट्स को सूचित करेंगें।

ठाकुर बांके बिहारी मंदिर वृंदावन में श्रद्धालुओं की सेवा में लगी सिविल डिफेंस

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: हरियाली तीज के अवसर पर जिलाधिकारी महोदय मथुरा के आदेश अनुसार हरियाली तीज के उपलक्ष में दिनांक 6 जुलाई 2024 एवं 7 जुलाई 2024 को ठाकुर बांके बिहारी मंदिर वृंदावन में सिविल डिफेंस मथुरा के वार्डन और फायर फाइटर की ड्यूटी लगाई गई गई। जिनको ठाकुर बांके बिहारी जी मंदिर वृंदावन गेट नंबर एक गेट नंबर दो गेट नंबर तीन गेट नंबर चार गेट नंबर पांच ठाकुर बांके बिहारी जी के मंदिर के अंदर सो सैया अस्पताल के बैरियर ,विद्यापीठ चौराहे , पीपा पुल आदि स्थानों पर पुलिस एवं प्रशासन के सहयोग हेतु सिविल डिफेंस मथुरा की ड्यूटी लगाई गई ।जिसमें उप नियंत्रक जसवंत सिंह सहायक उप नियंत्रक जितेन्द्र देव सिंह , डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल,पोस्ट वार्डन अशोक यादव, राम कुमार चौहान, महेश शर्मा, सैलेश, राकेश, राम सैनी, नरेश अग्रवाल, कौशल, जितेन्द्र, शुभम कुमार, कौशिक, सुनैना, सैली अग्रवाल, राहुल कुमार आदी वॉर्डन और फायर फाइटर बाके बिहारी जी मंदिर वृंदावन में अपनी सेवाएं देते हुए।

नोएडावालों के लिए खुशखबरी, प्रदेश का पहला EMC यीडा क्षेत्र में होगा विकसित; योगी सरकार ने केंद्र को भेजा प्रस्ताव

परिवहन विशेष न्यूज

अगर आप नोएडा में रहते हैं तो यह खबर आपके लिए हैं। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में उत्तर प्रदेश का पहला इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर यानि ईएमसी विकसित होगा। ईएमसी में कॉमन फैसेलिटी सेंटर और अन्य ढांचागत सुविधाओं के विकास के लिए केंद्र सरकार से 140 करोड़ रुपये का अनुदान मिलेगा। बता दें इसके बन जाने के बाद पंखे एसी कूलर स्विच गेयर आदि का निर्माण होगा।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में प्रदेश का पहला इलेक्ट्रानिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (ईएमसी) विकसित होगा। प्रदेश सरकार ने ईएमसी का प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा है, ताकि ईएमसी में स्थापित होने वाली इकाईयों को केंद्र सरकार की नीति का लाभ मिल सके। हैवेल्स इंडिया ईएमसी की मुख्य इकाई होगी। उसे दो सौ एकड़ जमीन आवंटित की जाएगी।

प्राधिकरण के सेक्टर 10 में दो सौ एकड़ जमीन आरक्षित

केंद्र सरकार की ईएमसी 2 नीति लागू होने के बाद प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रानिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (EMC) विकसित करने का फैसला किया है। इसके लिए यमुना प्राधिकरण (Yamuna Authority) क्षेत्र को चुना गया है। प्राधिकरण के सेक्टर 10 में इसके लिए दो सौ एकड़ जमीन भी आरक्षित कर दी गई है।

हैवेल्स इंडिया के साथ ईएमसी विकसित करने पर सहमति भी बन चुकी है। हैवेल्स इंडिया पचास एकड़ में इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद बनाने के लिए इकाई स्थापित करेगी। इसमें पंखे, एसी, कूलर, स्विच गेयर आदि का उत्पादन होगा।

कंपनी पहले चरण में आठ सौ करोड़ का करेगी निवेश

कंपनी पहले चरण में आठ सौ करोड़ का निवेश करेगी। ईएमसी के लिए हैवेल्स अन्य कंपनियों के साथ मिलकर स्पेशल परपज व्हीकल बनाएगी। इन कंपनियों को हैवेल्स ही भूखंड विकसित कर उनका आवंटन करेगी।

यमुना प्राधिकरण सीईओ डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर (Electronics Manufacturing Cluster) यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में निवेश के साथ रोजगार की मांग को पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगा।

ईएमसी में कॉमन फैसेलिटी सेंटर व अन्य ढांचागत सुविधाओं के विकास के लिए केंद्र सरकार से 140 करोड़ रुपये का अनुदान मिलेगा। ईएमसी में कम से कम छह इकाईयों की स्थापना होगा।

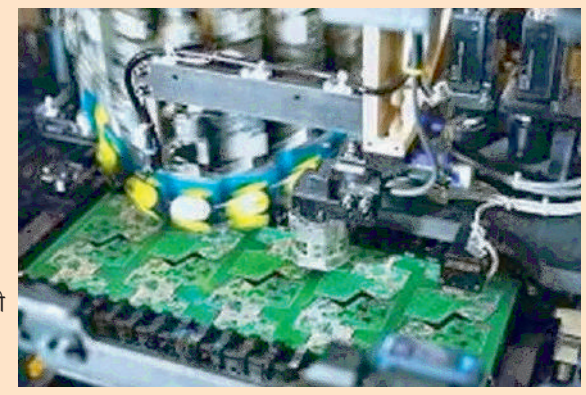

इन क्षेत्रों से संबंधित उपकरण का होगा उत्पादन

- आटोमोटिव इलेक्ट्रॉनिक्स
- इंडस्ट्रियल इलेक्ट्रॉनिक्स
- कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स
- मेडिकल इलेक्ट्रॉनिक्स
- कंप्यूटर हार्डवेयर
- टेलिकॉम एंड नेटवर्किंग
- ई मोबिलिटी कंपोनेंट

एमडीपी के बाद दूसरी अहम परियोजना

मेडिकल डिवाइस पार्क (एमडीपी) के बाद ईएमसी दूसरी अहम परियोजना है, जिसके लिए यीडा क्षेत्र को चुना गया है। कोविड के बाद चिकित्सा उपकरण में आत्म निर्भरता के लिए केंद्र सरकार ने देश में मेडिकल डिवाइस पार्क

विकसित करने का फैसला किया था। उत्तर प्रदेश के इकलौते एमडीपी के लिए यीडा क्षेत्र को चुना गया था। सेक्टर 28 में साढ़े तीन सौ एकड़ में इसे विकसित किया जा रहा है। एमडीपी में कॉमन फैसेलिटी सेंटर के लिए केंद्र सरकार ने सौ करोड़ का अनुदान दिया है। इसमें 74 भूखंडों का आवंटन एवं दो का निर्माण शुरू हो चुका है।

यीडा क्षेत्र में होगी सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना, पांच कंपनियों के लिए 425 एकड़ जमीन आवंटित करेगा प्राधिकरण

यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना के लिए भारत सरकार से जल्द मंजूरी मिलने की उम्मीद है। पांच कंपनियों ने जमीन मांगी है। यीडा 425 एकड़ में इन्हें जमीन उपलब्ध कराएगा। यीडा के सीईओ ने बताया कि जमीन पर मिलने वाली सब्सिडी से लेकर अन्य रियायतें दी जाएंगी। बता दें एक सेमिकंडक्टर इकाई की स्थापना करने में चालीस से अस्सी हजार करोड़ रुपये लगता है।

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना पर केंद्र सरकार की स्वीकृति जल्द मिल सकती है। प्रदेश में सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना की इससे शुरुआत हो जाएगी। यमुना प्राधिकरण से आशय पत्र मिलने के बाद पांच कंपनियों ने केंद्र सरकार में सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना के लिए आवेदन किया है। पांच कंपनियों के लिए प्राधिकरण 425 एकड़ जमीन आवंटित करेगा।

पांच कंपनियों ने सेमिकंडक्टर इकाई के निर्माण के लिए मांगी जमीन

यमुना प्राधिकरण क्षेत्र (Yamuna Authority Area) में सेमिकंडक्टर उद्योग की स्थापना के लिए काफी समय से प्रयास रहे हैं, लेकिन अब इन प्रयासों के फलीभूत होने की उम्मीद है। पांच कंपनियों ने सेमिकंडक्टर इकाई के निर्माण के लिए प्राधिकरण से जमीन मांगी है। इसमें भारत सेमी सिस्टम प्रा. लि., टार्क सेमिकंडक्टर प्रा. लि., केंस सेमिकान प्रा. लि., आडीटेक सेमिकंडक्टर व वामा सुंदरी इन्वेस्ट इंडिया प्रा. लि. के साथ संयुक्त रूप से एचसीएल शामिल है।

प्राधिकरण इन कंपनियों को भूखंड आवंटन के लिए सहमति देते हुए आशय पत्र जारी कर चुका है। सीईओ यमुना प्राधिकरण डा. अरुणवीर सिंह ने बताया कि केंद्र सरकार व राज्य सरकार ने सेमिकंडक्टर उद्योग के लिए नीति तय कर रखी है। इसमें जमीन पर मिलने वाली सब्सिडी से लेकर अन्य रियायतें शामिल हैं।

कंपनियों को आशय पत्र के साथ आवेदन करना जरूरी

नीति का लाभ लेने के लिए कंपनियों को आशय पत्र के साथ आवेदन करना जरूरी होता है। इसलिए कंपनियों को आशय पत्र जारी किए जा चुके हैं। दो कंपनियों के आवेदन की जांच प्रक्रिया पूरी होने के बाद जल्द स्वीकृति मिलने की उम्मीद है। इसमें वामा सुंदरी इंवेस्ट इंडिया प्रा. लि. व टार्क सेमिकंडक्टर प्रा. लि. शामिल हैं।

वामा सुंदरी इन्वेस्ट इंडिया प्रा. लि. को सेकटर दस में पचास एकड़, टार्क सेमिकंडक्टर प्रा. लि. को सेक्टर 28 में 125 एकड़ जमीन आवंटित की जाएगी। इसके अतिरिक्त भारत सेमिकंडक्टर सिस्टम प्रा. लि. को सेक्टर दस में पचास एकड़, केंस सेमिकंडक्टर प्रा. लि. को पचास एकड़ व ऑडीटेक सेमिकंडक्टर को सेक्टर दस में सौ एकड़ जमीन आवंटित की जाएगी।

एक सेमिकंडक्टर इकाई की स्थापना में चालीस से अस्सी हजार करोड़ का निवेश होता है। प्रदेश में यीडा क्षेत्र में सेमिकंडक्टर उद्योग की यह पहली इकाई होगी। इसके जरिये प्रदेश में बड़े पैमाने में निवेश आएगा।

गुरुग्राम के बंद घर में मिला 762 किलो गांजा, सरपंच के सामने तोड़ा गया ताला तो हैरान रह गई पुलिस

पुलिस ने बताया कि इस दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया गया जिसके बाद गांव के सरपंच और एक गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा गया। वहीं इस पूरी छापेमारी की वीडियोग्राफी भी की गई है। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि जांच के दौरान टीम को प्लास्टिक की बोरियों में 762 .15 किलो अवैध गांजा मिला।

गुरुग्राम। गुरुग्राम के पटौदी क्षेत्र के नानू खुर्द गांव में एक खाली घर से गांजे का जखीरा बरामद किया गया है। गुरुग्राम पुलिस ने छापा मारकर 762.15 किलो अवैध गांजा बरामद किया, जिसकी बाजार में कीमत करोड़ों रुपये की है।

पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर इंस्पेक्टर संदीप कुमार के नेतृत्व में डीएलएफ फेज 4 क्राइम यूनिट की टीम ने सोमवार रात नानू खुर्द गांव के एक घर में छापा मारा। पुलिस वहां पहुंची तो घर बंद मिला। इसके बाद पुलिस की टीम ने दौलताबाद कुनी गांव के मूल निवासी मकान मालिक राम सिंह से संपर्क किया।

गांव के सरपंच और गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा

पुलिस ने बताया कि इस दौरान ड्यूटी मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया गया, जिसके बाद गांव के सरपंच और एक गार्ड की मौजूदगी में घर का ताला तोड़ा गया। वहीं, इस पूरी छापेमारी की वीडियोग्राफी भी की गई है।

तस्करों की धरपकड़ के लिए छापेमारी कर रही पुलिस

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि जांच के दौरान टीम को प्लास्टिक की बोरियों में 762.15 किलो अवैध गांजा मिला। बाद में पटौदी पुलिस स्टेशन में एक अज्ञात संदिग्ध के खिलाफ नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई। इतनी भारी मात्रा में गांजा मिलने के बाद पुलिस तस्करों की धरपकड़ के लिए छापेमारी कर रही है।

पडोसी देशों में भारत-विरोधी सरकारों के गठन की चिन्ता

ललित गर्ग

हसीना का जाना या उनका निष्कासन चीन एवं पाकिस्तान की साजिशों का परिणाम है, जो भारत के लिए कई मायनों में झटका है। इसका यह मतलब भी है कि भारत ने पड़ोस में अपने इकलौते स्थिर साथी को अब खो दिया है।

भारत के पडोसी देशों में अस्थिरता एवं अराजकता का माहौल चिन्ताजनक है। बांग्लादेश के साथ-साथ भारत के पड़ोसी मुल्कों में हुए हालिया अराजक, हिंसक एवं अस्थिरता के घटनाक्रमों से एक तस्वीर बनती है एवं एक सन्देश उभर कर आता है, वह है, चीनी के द्वारा भारत विरोधी सरकारों के गठन की साजिश। सिर्फ बांग्लादेश ही नहीं, बल्कि मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और श्रीलंका में राजनीतिक उथल-पुथल और तख्तापलट के बाद अस्तित्व में आई सरकारों ने भारत के लिए चुनौतीपूर्ण हालात पैदा कर दिए हैं। भारत को सतर्क एवं सावधानी बरतने की जरूरत है। अब सवाल ये उठते हैं कि भारत के पड़ोसी देशों में हो रही इस अराजकता एवं अस्थिरता के कारण क्या हैं? यह सिर्फ एक संयोग है या फिर साजिश? क्या इसके पीछे चीन का हाथ है? क्या पाकिस्तान भी इसके लिये जिम्मेदार है? पड़ोसी देशों में पनप रही इस राजनीतिक अस्थिरता का भारत पर क्या असर होगा?

इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन ने पाकिस्तानी तत्वों के जरिये शेख हसीना विरोधी आंदोलन को हवा दी। निश्चित ही शेख हसीना की छवि एक अधिनायकवादी शासक की बनी और पश्चिमी देश विशेषकर अमेरिका उनकी निंदा करने में मुखर हो उठा। अमेरिका उनकी नीतियों से पहले से ही खफा था, क्योंकि वह मानवाधिकार और लोकतंत्र पर उसकी नसीहत सुनने को तैयार नहीं थीं। उनका सत्ता से बाहर होना भारत के लिए अच्छी खबर नहीं है, बांग्लादेश में एक अर्से से भारत विरोधी ताकतें सक्रिय हैं। उनका भारत विरोधी चेहरा आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान भी दिखा। यह ठीक नहीं कि हिंसक प्रदर्शनकारी अभी भी हिंदुओं और उनके मंदिरों के साथ भारतीय प्रतिष्ठानों को निशाना बना रहे हैं। लगभग ऐसी ही स्थितियां चीन और पाकिस्तान ने मालदीव, नेपाल, अफगानिस्तान और श्रीलंका में खड़ी की है।

हसीना का जाना या उनका निष्कासन चीन एवं पाकिस्तान की साजिशों का परिणाम है, जो भारत के लिए कई मायनों में झटका है। इसका यह मतलब भी है कि भारत ने पड़ोस में अपने इकलौते स्थिर साथी को अब खो दिया है। भारत अपने चारों ओर से बदहाल, कट्टरवादी, अराजक एवं अस्थिर पड़ोसियों से घिरा है। हमारे पड़ोस में अफगानिस्तान है, जिस पर कट्टरपंथी तालिबान का राज है। भारत-विरोधी समूहों को समर्थन देने का उसका एक काला इतिहास रहा है। पाकिस्तान तो भारत का दुश्मन देश ही है। एक बेहद अशांत पड़ोस, जो कट्टरपंथियों, सैन्य शासकों, दिवालिया अर्थव्यवस्थाओं और जलवायु-परिवर्तन के कारण डूबते देशों में अग्रणी है। अपनी आर्थिक बदहाली के बावजूद वह भारत विरोधी षडयंत्र रचता ही रहता है। वह राजनीतिक अस्थिरता का पर्याय है। विडम्बना देखिये कि पाकिस्तान के एक भी वजीरे-आजम ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया है। हमेशा वहां की फौज ने उनके कार्यकाल में टांग डाली है। दक्षिण में श्रीलंका और मालदीव हैं। श्रीलंका 2022 में दिवालिया हो गया था। वहां से सामने आई तस्वीरें एवं घटनाक्रम आज के बांग्लादेश से काफी मिलती-जुलती रही हैं। वहां भी प्रदर्शनकारियों ने बड़ा जनआंदोलन किया और जनता ने राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया, जिस कारण राष्ट्रपति गोटाबाया को देश छोड़कर भागना पड़ा था। आर्थिक दिवालियेपन का शिकार यह देश चीन के कर्ज के जाल में फंसा हुआ है। श्रीलंका के कर्ज का एक बड़ा हिस्सा चीन का था, जिस कारण चीन ने यहां के हंबनटोटा बंदरगाह पर कब्जा कर लिया था। हालात यह हो गए थे कि श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार खाली हो गया था।

मालदीव एक समय भारत का सहयोगी हुआ करता था। वहां की अर्थव्यवस्था चीन और भारत पर निर्भर है। हालांकि, मालदीव की भारत से नजदीकी हमेशा चीन को खटकती थी, जिस कारण उसने इस देश को अपने कर्ज के जाल में फंसाया। धीरे-धीरे इस देश की माली हालत बुरी होने लगी, जिसके बाद यहां चीन समर्थक और इंडिया आउट का नारा देने वाले मोहम्मद मुइज्जू की सरकार बनी। पाकिस्तान एवं चीन के दबाव में उनके नए राष्ट्रपति के सुर बदले हुए हैं। वहां भारत-विरोधी स्वर उग्रतम बने हुए हैं। मुइज्जू ने राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले चीन का ही दौरा किया था और इसके बाद उन्होंने कई भारत विरोधी फैसले किए, जिसमें मालदीव से भारतीय सैनिकों की वापसी भी शामिल थी। वहां भारत-विरोधी स्वर उग्रतम बने हुए हैं।

नेपाल बीते कई सालों से राजनीतिक अस्थिरता के दौरे से गुजर रहा है। हाल ही में यहां एक बार फिर से सत्ता परिवर्तन हुआ और प्रो-भारत माने जाने वाली प्रचंड सरकार सत्ता से बाहर हो गई। अब यहां चीन समर्थक केपी शर्मा ओली की सरकार है। ओली इससे पहले 2015-16 में नेपाल के प्रधानमंत्री रह चुके हैं। उस समय भारत और नेपाल के संबंध काफी तनावपूर्ण रहे थे। नेपाल में गत 16 वर्षों में 14 सरकारें बदल चुकी हैं। हालात इतने बदहाल हैं कि वहां पर कुछ लोग राजशाही को फिर से बहाल करना चाहते हैं। नेपाल में भी चीन ने जाल बिछा रखा है। चीन विस्तारवादी, अलोकतांत्रिक और अपने आस-पड़ोस के देशों के साथ धौंस-डपट करने वाला देश है। वह भारत के भूखंडों पर अपनी मिल्कियत जताता रहता है। भूटान में घरेलू राजनीति स्थिर है, लेकिन वह चीन के साथ सीमा-समझौते पर हस्ताक्षर करना चाहता है, और यह भारत के लिए चिंता का बड़ा कारण है।

भारतीय उपमहाद्वीप के मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान और श्रीलंका के बाद अब बांग्लादेश में उत्पन्न होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों को दुनिया चुपचाप सब देख रही है, वहीं भारत इसके लिए खुद को तैयार कर रहा है, क्योंकि बांग्लादेश की घटनाओं का उस पर सीधा असर होगा। भारत शांति कायम रखने एवं पडोसी देशों से मित्रता कायम रखने के अपने संकल्पों एवं रणनीतियों के लिए इन देशों पर भरोसा नहीं कर सकता। हमारे इर्द-गिर्द मची उथलपुथल, अस्थिरता एवं अराजकता हमारे वैश्विक एजेंडे को भी बाधित करती है। भारत की आबादी 1.4 अरब है। उसके सभी पड़ोसियों की कुल आबादी 50 करोड़ है। अर्थव्यवस्था के साथ भी ऐसा ही है। भारत की जीडीपी तीन ट्रिलियन डॉलर है। बाकी सब मिलाकर लगभग एक ट्रिलियन हैं। भारत समर्थ है, शक्ति सम्पन्न है, दुनिया की तीसरी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, इसलिये उसे अधिक बलों की तैनाती, अधिक रक्षा खर्च और सीमाओं पर अधिक बुनियादी ढांचों का निर्माण करना होगा। क्योंकि भारत के सभी पडोसी देशों पर चीन का दबदबा है और उसके दबाव में भारत के लिये कभी भी संकट बन सकते हैं।

बांग्लादेश के घटनाक्रम पर भारत की सतर्कता, विवेक एवं समझदारी सराहनीय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार पडोसी देशों में उत्पन्न हालातों पर समझ एवं संयम से कदम उठाती रही है। बांग्लादेश की तख्तापलट घटनाओं पर भी उसने पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई, विपक्षी दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका के साथ अपनी बात रखी। ऐसे ज्वलंत मुद्दों पर सर्वसम्मति

बनना जीवंत लोकतंत्र का प्रमाण है। ऐसा अनुकरणीय उदाहरण पडोसी देशों में न मिलना ही उनकी अस्थिरता एवं अराजकता का बड़ा कारण है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में ऐसी स्थिति कतई नहीं बननी चाहिए कि जहां राजनीतिक दलों के बीच दूरियां इस कदर बढ़ जायें कि फौज का दखल देना पड़े या पडोसी देश अपनी स्वार्थों की रोटियां सेंकने में सफल हो जाये। भारत के पडोसी देशों के लोग केवल बुराइयों से लड़ते नहीं रह सकते, वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निश्चित सकारात्मक लक्ष्य के साथ जीना चाहते हैं। अन्यथा जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाएगी।

इन पडोसी देशों के नेता दो तरह के हैं- एक वे जो कुछ करना चाहते हैं, दूसरे वे जो कुछ होना चाहते हैं। असली नेता को सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी होकर, प्रासंगिक और अप्रासंगिक के बीच भेदरेखा बनानी होती है। संयुक्त रूप से कार्य करें तो सभी पडोसी देश मिलकर विश्व में एक बड़ी ताकत बन सकते हैं। लेकिन उन्होंने सहचिन्तन को शायद कमजोरी मान रखा है। नेतृत्व के नीचे शून्य तो सदैव खतरनाक होता ही है पर यहां तो ऊपर-नीचे शून्य ही शून्य है। इन पडोसी देशों के स्तर पर तेजस्वी और खरे नेतृत्व का नितान्त अभाव है। भारतीय उपमहाद्वीप के देशों के केनवास पर शांति, प्रेम, विकास और सह-अस्तित्व के रंग भरने की अपेक्षा है। भारत इस स्थिति में है, उसे मनोबल के साथ पडोसी देशों में स्थिरता, शांति, लोकतंत्र एवं आपसी समझ की ज्योत जलाने के लिये तत्पर रहना चाहिए, जो उन देशों के साथ भारत के लिये भी जरूरी है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर

मंगलुरु: दक्षिण कन्नड़ में इथेनॉल से चलने वाले ऑटो-रिक्शा को स्वतंत्र रूप से चलने की दी गई अनुमति

परिवहन विशेष न्यूज

दक्षिण कन्नड़ (डीके) के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) मुल्लई मुहिलान ने एक आदेश जारी कर जिले में मेथनॉल और इथेनॉल से चलने वाले ऑटो-रिक्शा के साथ-साथ इलेक्ट्रिक ऑटो-रिक्शा को भी स्वतंत्र रूप से चलने की अनुमति दे दी है। ई-रिक्शा और मेथनॉल और इथेनॉल का उपयोग करने वाले सभी ऑटो-रिक्शा पर जोन 1 के लिए नीले स्टिकर और जोन 2 के लिए पीले स्टिकर अनिवार्य करने वाली पिछली अधिसूचना को निरस्त कर दिया गया है। यह आवश्यकता शुरू में पुलिस विभाग द्वारा पहचान के उद्देश्यों के लिए निर्धारित की गई थी।

आरटीओ अधिकारियों को इस नए आदेश को सख्ती से लागू करने का निर्देश दिया गया है। इसके अतिरिक्त मंगलुरु सिटी डीसीपी और जिला पुलिस अधीक्षक को इस निर्देश से संबंधित आवश्यक सूचनात्मक बोर्ड लगाने का अधिकार दिया गया है। मोटर वाहन अधिनियम के अनुसार डीसी ने मंगलुरु सिटी कॉरपोरेशन (एमसीसी) आयुक्त और अन्य क्षेत्रों में संबंधित स्थानीय अधिकारियों को ऑटो-रिक्शा के लिए निर्दिष्ट पार्किंग स्थल और स्टॉपिंग प्वाइंट निर्धारित करने का भी निर्देश दिया है।

भविष अग्रवाल ने शेयर की ओला इलेक्ट्रिक बाइक की पहली तस्वीर, 15 अगस्त को मारेगी ग्रैंड एंट्री

परिवहन विशेष न्यूज

Ola ने टीजर इमेज का एक नया सेट साझा किया है जिसमें लॉन्च से पहले आगामी इलेक्ट्रिक बाइक के बारे में कई विवरण सामने आए हैं। ओला इलेक्ट्रिक के सीईओ भाविश अग्रवाल ने आगामी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल की टेस्ट राइड लेते हुए खुद की एक तस्वीर साझा की है। ओला इलेक्ट्रिक ने पिछले साल इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के कॉन्सेप्ट वर्जन को पेश किया था।

नई दिल्ली। ओला इलेक्ट्रिक इस स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर भारत में अपनी पहली इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लॉन्च करने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह एक ऐसे सेगमेंट में प्रवेश करेगी, जिसमें फिलहाल भारत के टॉप-3 दोपहिया वाहन निर्माताओं में से कोई भी नहीं है।

Ola की Electric Bike

ओला ने टीजर इमेज का एक नया सेट साझा किया है, जिसमें लॉन्च से पहले आगामी इलेक्ट्रिक बाइक के बारे में कई विवरण सामने आए हैं। ओला इलेक्ट्रिक ने पिछले साल इसी दिन आयोजित एक इवेंट के दौरान अपनी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिलों के 4 वेरिएंट प्रदर्शित किए थे। ईवी निर्माता ने पहले पुष्टि की थी कि उसकी पहली ऑल-इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल अगले साल भारत में लॉन्च की जाएगी।

Bhavish ने शेयर की नई तस्वीर

ओला इलेक्ट्रिक के सीईओ भाविश अग्रवाल ने आगामी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल की टेस्ट राइड लेते हुए खुद की एक तस्वीर साझा की है। लॉन्च की तारीख तक इसके वेरिएंट और प्रोडक्शन-रेडी लुक को गुप्त रखने के लिए इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल को छिपाने के लिए इमेज को सावधानी से धुंधला कर दिया गया है।

हालांकि, ईवी निर्माता ने इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के डिजाइन एलीमेंट को दिखाते हुए चार इमेज का एक सेट शेयर किया है। इनमें इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल की फ्रंट नोज शामिल है, जिसमें हेडलाइट्स, सीट और टेललाइट होंगी।

इससे पहले ओला इलेक्ट्रिक ने आगामी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल की हेडलाइट को टीज किया था। इसमें आगामी मॉडल के ट्विन-पॉड एलईडी हेडलाइट और यूनिक रियरव्यू मिरर की झलक दिखी है। ईवी निर्माता द्वारा अब तक टीज की गई इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के लुक को देखते हुए, यह संभावना है कि ओला पहले मॉडल का स्ट्रीट नेकेड वर्जन पेश करेगी।

संभावित फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

आगामी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के स्पेसिफिकेशन के बारे में बहुत कम जानकारी है। हालांकि, ईवी निर्माता ने पहले ही पुष्टि कर दी है कि मॉडल ओला द्वारा अपनी नई सुविधा में विकसित ईवी बैटरी से लैस होगी, जिसे अपने इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर्स के लिए बैटरी सेल बनाने के लिए स्थापित किया गया है। इससे पहले, भाविश अग्रवाल ने कहा था कि इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल इस सेगमेंट में सबसे बड़ी बैटरी के साथ आएगी, जो यह भी संकेत देती है कि वे दूसरों की तुलना में अधिक रेंज प्रदान करेंगी।

ओला इलेक्ट्रिक ने पिछले साल इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के कॉन्सेप्ट वर्जन को पेश किया था। कंपनी ने पिछले साल आगामी इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल के चार वेरिएंट प्रदर्शित किए थे। इनमें रोडस्टर, एडवेंचर, क्रूजर और डायमंडहेड शामिल है। ये सभी मोटरसाइकिल एक ही प्लेटफॉर्म का उपयोग करेंगी।

TVS Ntorq 125 नई कलर स्कीम के साथ लॉन्च; 86,871 रुपये है शुरुआती कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

Race XP वर्जन का 124.8cc इंजन स्टैण्डर्ड वेरिएंट से ज्यादा पावर देने के लिए तैयार किया गया है। यह 10.6bhp और 10.8Nm का पावर देता है जबकि बेस मॉडल 9.25bhp और 10.05Nm का पावर देता है। सभी वेरिएंट में एक समान चीज ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ डेटा-इंटेंसिव LCD कंसोल है। स्टैंडर्ड वेरिएंट में ब्रेकिंग के लिए दोनों तरफ ड्रम ब्रेक दिए गए हैं।

नई दिल्ली। टीवीएस मोटर कंपनी ने Ntorq 125 Standard और Race XP को नए कलर स्कीम में पेश किया है। इसका पहला मॉडल टर्कुइज, हार्लेक्विन ब्लू और नार्डो ग्रे के नए शेड्स में उपलब्ध है, वहीं दूसरा मॉडल नए मैट ब्लैक ट्रिम में उपलब्ध है। बेस वेरिएंट की एक्स-शोरूम (दिल्ली) कीमत 86,871 रुपये से शुरू होती है और Race XP वेरिएंट की कीमत 97,501 रुपये है।

TVS Ntorq 125 में क्या बदला?

बेस Ntorq के नए रंग फ्रंट एप्रन और अंडर-सीट पैनल पर अपडेट किए गए डिकल्स की बदौलत नए लगते हैं। वहीं, नई Race XP अपने बॉडीवर्क पर मैट और ग्लॉसी पियानो ब्लैक शेड कलर के संयोजन के साथ एप्रन पर चेकर्ड ग्राफिक्स और रेड अलॉय व्हील्स के साथ शानदार दिखती है। मैकेनिकल फ्रंट पर, Ntorq 125 के दोनों वेरिएंट अपरिवर्तित हैं।

इंजन और स्पेसिफिकेशन

Race XP वर्जन का 124.8cc इंजन स्टैण्डर्ड वेरिएंट से ज्यादा पावर देने के लिए तैयार किया गया है। यह 10.6bhp और 10.8Nm का पावर देता है, जबकि बेस मॉडल 9.25bhp और 10.05Nm का पावर देता है। TVS ने रेस XP में दो राइडिंग मोड और वॉयस असिस्टेंट फंक्शन भी दिए हैं।

फीचर्स

सभी वेरिएंट में एक समान चीज ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ डेटा-इंटेंसिव LCD कंसोल है। स्कूटर में टेलिस्कोपिक फोर्क्स और मोनोशॉक के साथ दोनों तरफ 12-इंच के अलॉय व्हील दिए गए हैं। ब्रेकिंग के लिए दोनों तरफ ड्रम ब्रेक दिए गए हैं, जबकि हाई वेरिएंट में आगे की तरफ सिंगल डिस्क ब्रेक दिया गया है।

नौ अगस्त को भारत में लॉन्च होगी लेम्बोर्गिनी URUS SE, दमदार इंजन के साथ मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

इटली की सुपर कार निर्माता Lamborghini की ओर से URUS एसयूवी के SE वर्जन को नौ अगस्त 2024 को देश में लॉन्च किया जाएगा। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। URUS SE में कितना दमदार इंजन मिल सकता है। इसे किस कीमत पर भारतीय बाजार (Lamborghini URUS SE Launch in August 2024) में लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। सुपर कार बनाने वाली इटालियन निर्माता Lamborghini की ओर से भारत में URUS SE को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। इसमें कितना दमदार इंजन मिल सकता है। किस कीमत पर (Lamborghini URUS SE Launch) लॉन्च की जाएगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

9 अगस्त को आएगी Lamborghini URUS SE

Lamborghini की ओर से एसयूवी सेगमेंट में सिर्फ एक ही गाड़ी को ऑफर किया जाता है। बाजार में उपलब्ध URUS नाम की इस एसयूवी का SE वर्जन कल देश में लॉन्च कर दिया जाएगा। जिसमें दमदार इंजन के साथ ही कई बेहतरीन फीचर्स और तकनीक को दिया जाएगा।

मिलेगा दमदार इंजन

लैम्बॉर्गिनी की ओर से URUS SE में चार लीटर की क्षमता का वी8 इंजन दिया जाएगा। चार सिलेंडर वाले इंजन से एसयूवी को 456 किलोवाट की पावर और 800 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके अलावा एसयूवी में 25.9 kWh क्षमता की बैटरी को भी दिया जाएगा इसकी पावर 456 किलोवाट हो जाएगी। एसयूवी में 8स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स को दिया जाएगा। इसे सिर्फ 3.4 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाया (performance coupe SUVs in India) जा सकता है। इसकी टॉप स्पीड 312 किलोमीटर प्रति घंटा तक होगी। वहीं इसे 33.5 मीटर में 100 की स्पीड से पूरी तरह रोका जा सकता है।

मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाएगा। जिसमें कनेक्टिड नेविगेशन सर्विस, कार फाइंडर, रिमोट पार्क असिस्ट, रिमोट चार्जिंग, इमरजेंसी कॉल, ऑनलाइन रोड साइड असिस्टेंस, एंटी थेफ्ट अलार्म नोटिफिकेशन, जियोफेंसिंग अलर्ट, ड्राइविंग के लिए स्ट्राडा, स्पोर्ट, कोरसा, साबिया, टेरा और नीव जैसे मोड्स मिलेंगे।

कीमत

लैम्बॉर्गिनी उरुस एसई की कीमत की जानकारी कंपनी की ओर से लॉन्च के समय दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे भी चार करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत (URUS SE price in India) के आस-पास ही लॉन्च किया जा सकता है।

बीते महीने क्रेटा का चला जादू, Top-5 में शामिल हुई हुंडई, मारुति, टाटा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जुलाई 2024 के दौरान देशभर में बड़ी संख्या में कारों और एसयूवी सेगमेंट में बिक्री हुई। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि बिक्री के मामले में बीते महीने में किन पांच (Top 5 Cars and SUVs) कारों को सबसे ज्यादा पसंद किया गया।

Hyundai Creta बनी पहली पसंद

August 2024 के दौरान एसयूवी सेगमेंट में Hyundai की Creta को सबसे ज्यादा पसंद किया गया। कंपनी की इस एसयूवी की बीते महीने में कुल 17350 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। जबकि पिछले साल इसकी 14062 यूनिट्स की August में बिक्री हुई है। Hyundai Creta की शुरूआती एक्स शोरूम कीमत 10.99 लाख रुपये है।

Maruti Swift की भी रही मांग

Maruti की ओर से Swift को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। बीते महीने इसको 16854 ग्राहकों ने खरीदा। जबकि पिछले साल इसी अवधि में इसकी कुल 17896 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। भारत में इस हैचबैक की एक्स शोरूम कीमत की शुरूआत 6.49 रुपये से हो जाती है।

Maruti Wagon R रही तीसरे नंबर पर

देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता मारुति की ओर से हैचबैक कार के तौर पर वैगन आर को ऑफर किया जाता है। लंबे समय से भारतीयों की पसंदीदा कार के तौर पर वैगन आर रही है। बीते महीने इस कार की कुल 16191 यूनिट्स की बिक्री हुई है। बाजार में इस कार की एक्स शोरूम कीमत की शुरूआत 5.54 रुपये से हो जाती है।

Tata Punch

टाटा की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर पंच को ऑफर किया जाता है। कंपनी की यह सस्ती एसयूवी अपने सेगमेंट में सबसे ज्यादा पसंद की जाती है। बीते महीने में इसकी 16121 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले August 2023 में इसकी 12019 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। इसकी शुरूआती एक्स शोरूम कीमत 6.13 लाख रुपये से शुरू होती है।

पांचवें नंबर पर रही Maruti Ertiga

मारुति की ओर से MPV के तौर पर Ertiga को भी ऑफर किया जाता है। बीते महीने में इसकी कुल 15701 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले इसे 14352 लोगों ने खरीदा था। इसकी कीमत की शुरूआत 8.69 लाख रुपये से हो जाती है।

न्यू-जैन मर्सिडीज-AMG GLC 43 Coupe 4MATIC भारतीय बाजार में लॉन्च, 1.10 करोड़ रुपये है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

GLC 43 AMG Coupe दो साल के अंतराल के बाद भारत वापस आई है। ये नवीनतम पीढ़ी की GLC SUV पर आधारित है और बाद वाली से आधार उधार लेती है। नई GLC 43 AMG कूप को 2.0-लीटर इन-लाइन फोर-सिलेंडर टर्बो पेट्रोल इंजन से पावर मिलेगी। 0-100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार परफॉरमेंस कूप एसयूवी 4.8 सेकंड में पकड़ लेती है।

नई दिल्ली। Mercedes-Benz India ने घरेलू बाजार में GLC 43 AMG Coupe 4MATIC लॉन्च की है। भारतीय बाजार में इसकी कीमत 1.10 करोड़ रुपये (एक्स-शोरूम, भारत) रखी गई है। न्यू जेन Mercedes-AMG GLC 43 Coupe 4MATIC में क्या कुछ खास है? आइए, जान लेते हैं।

डिजाइन

GLC 43 AMG Coupe दो साल के अंतराल के बाद भारत वापस आई है। ये नवीनतम पीढ़ी की GLC SUV पर आधारित है और बाद वाली से आधार उधार लेती है। समग्र डिजाइन को पैनमेरिकाना ग्रिल, AMG-स्पेक अलॉय व्हील्स और बड़े एयर इनटेक के साथ बीफियर बंपर सहित AMG ट्रीटमेंट के साथ उभारा गया है। स्टैंडर्ड GLC की तुलना में नई GLC 43 AMG कूप को रिसेडिंग रूफलाइन (पीछे हटने वाली छत) दी गई है।

फीचर्स और इंटीरियर

केबिन में स्टैंडर्ड GLC से समग्र लेआउट लिया गया है, लेकिन इसमें AMG-स्पेसिफिक अपग्रेड शामिल हैं। इसमें AMG परफॉरमेंस स्टीयरिंग व्हील, स्पोर्ट्स सीट्स, ऑल-ब्लैक केबिन के विपरीत कंट्रास्ट रेड स्टिचिंग और बहुत कुछ शामिल है।नई GLC 43 AMG Coupe 4MATIC भारत में पूरी तरह से निर्मित यूनिट (CBU) के रूप में आएगी।

इंजन और स्पेसिफिकेशन

नई GLC 43 AMG कूप को 2.0-लीटर इन-लाइन फोर-सिलेंडर टर्बो पेट्रोल इंजन से पावर मिलेगी। नई मोटर एक इलेक्ट्रिक गैस एग्जॉस्ट टर्बोचार्जर का उपयोग करेगी, जो F1 कारों से ली गई तकनीक है। साथ ही इसे एक 48-वोल्ट माइल्ड-हाइब्रिड सिस्टम भी दिया गया है। 3.0-लीटर V6 इंजन का उपयोग करने पर ये 415 bhp और 500 Nm का पीक टॉर्क विकसित करता है। इंजन को 9-स्पीड AMG मल्टी-क्लच ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है, जो सभी चार पहियों को पावर भेजता है।

0-100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार परफॉरमेंस कूप एसयूवी 4.8 सेकंड में पकड़ लेती है। मॉडल में कई ड्राइविंग मोड, थ्री-स्टेप AMG स्टीयरिंग के साथ एडजस्टेबल सस्पेंशन और कई नए फीचर्स दिए गए हैं।

विज्ञापन में कैरियर के अवसर और चुनौतियाँ

विजय गर्ग

व्यवसाय में विज्ञापन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आजकल मार्केटिंग पूरी तरह से विज्ञापनों पर निर्भर हो गई है। विज्ञापन ग्राहकों को कंपनी द्वारा पेश किए गए उत्पादों को खरीदने के लिए मनाने की कला है। यह जनसंचार की अवधारणाओं में से एक है। विज्ञापन क्षेत्र में करियर ग्लैमरस होने के साथ-साथ काफी प्रतिस्पर्धी भी है क्योंकि हर दिन अधिक से अधिक एजेंसियां खुल रही हैं।

व्यवसाय में विज्ञापन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आजकल मार्केटिंग पूरी तरह से विज्ञापनों पर निर्भर हो गई है। विज्ञापन ग्राहकों को कंपनी द्वारा पेश किए गए उत्पादों को खरीदने के लिए मनाने की कला है। यह जनसंचार की अवधारणाओं में से एक है। विज्ञापन क्षेत्र में करियर ग्लैमरस होने के साथ-साथ काफी प्रतिस्पर्धी भी है क्योंकि हर दिन अधिक से अधिक एजेंसियां खुल रही हैं। विज्ञापन के विभिन्न माध्यम हैं जैसे इंटरनेट, टीवी, रेडियो, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और होर्डिंग्स। यह मांग पैदा करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है; विपणन प्रणाली को बढ़ावा देना और आर्थिक विकास को बढ़ाना। विज्ञापन में नौकरी के अवसर और करियर की संभावनाएँ विज्ञापन जगत में अपना करियर बनाने के लिए कई विकल्प हैं। आपके कौशल के आधार पर इस उद्योग में स्टार्टअप के लिए आपके पास कई विकल्प हैं। नौकरी पेशा को मुख्यतः दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है: रचनात्मक नौकरियाँ: रचनात्मक नौकरियों में विभिन्न पेशे शामिल होते हैं। ये ऐसे काम हैं जो पूरी तरह से रचनात्मकता पर निर्भर हैं। कॉपीराइटर: कॉपीराइटर की मुख्य भूमिका विज्ञापन लिखना और विज्ञापनों के विज़ुअलाइज़ेशन के लिए रचनात्मक नारे, शब्द और ऑडियो स्क्रिप्ट बनाना है। एक विज्ञापन कॉपीराइटर को अत्यधिक रचनात्मक और कल्पनाशील होना चाहिए। अच्छे लेखन कौशल की भी आवश्यकता है। इसके अलावा, सभी विज्ञापन तकनीकों में गहरी रुचि रखें। कॉपीराइटर का काम अलग-अलग क्लाइंट के हिसाब से अलग-अलग होता है, क्लाइंट की मांग के अनुसार उन्हें उस विषय पर काम करना होता है। कॉपीराइटर बनने के लिए आपको संचार, अंग्रेजी या पत्रकारिता में स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होगी। भारत में एक कॉपीराइटर का औसत वार्षिक वेतन लगभग 2,98,315 रुपये है। ग्राफ़िक डिज़ाइनर: ग्राफ़िक डिज़ाइनर का मुख्य उद्देश्य विज्ञापनों के लिए डिज़ाइन तैयार करना है। डिज़ाइन इस तरह से है कि यह क्लाइंट के संदेश को उच्च दृश्य प्रभाव के साथ दर्शकों तक पहुंचाता है। आजकल अधिकांश डिज़ाइनिंग कार्य विभिन्न ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग प्रोग्रामों की सहायता से कंप्यूटर पर किया जाता है। एक ग्राफिक डिजाइनर में मजबूत कंप्यूटर स्किल के साथ-साथ मजबूत विजुअल सेंस भी होना चाहिए। इसके अलावा, ग्राफिक्स और टाइपोग्राफी में रुचि आवश्यक है। ग्राफिक डिजाइनरों को क्वार्क एक्सप्रेस, फ्रीहैंड, इलस्ट्रेटर, फोटोशॉप, 3डी स्टूडियो मैक्स, एक्रोबैट, डायरेक्टर, ड्रीमवीवर और फ्लैश जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए। एक पेशेवर ग्राफिक डिजाइनर बनने के लिए ललित कला, ग्राफिक कला या अन्य दृश्य कला से संबंधित विषयों में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। भारत में ग्राफ़िक डिज़ाइनर का औसत वार्षिक वेतन लगभग 6,00,000 रुपये है। फ़ोटोग्राफ़र: एक विज्ञापन फ़ोटोग्राफ़र मार्केटिंग अभियानों में अपने फ़ोटोग्राफ़ी कौशल का उपयोग करने के लिए विज्ञापन एजेंसी के साथ काम करता है। यह ग्राहक की मांग पर निर्भर करता है कि आप किसी उत्पाद, स्थान, मॉडल या भवन का फोटो खींचेंगे। मार्केटिंग में उपयोग की जाने वाली तस्वीरें दिलचस्प होने के साथ-साथ ध्यान खींचने वाली भी होनी चाहिए। वर्तमान समय में ऑनलाइन शॉपिंग बहुत आम बात है। लोग प्रोडक्ट की फोटो देखकर ही प्रोडक्ट ऑर्डर कर देते हैं। इस प्रकार फोटोग्राफी विज्ञापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मार्केटिंग फोटोग्राफर बनने के लिए कैमरे का उचित ज्ञान बहुत जरूरी है। आप फोटोग्राफी से संबंधित सभी तकनीकी कौशल से परिचित हैं। साथ ही, विज्ञापन उद्योग में पेशेवर फोटोग्राफर बनने के लिए फोटोग्राफी या उससे संबंधित स्नातक की डिग्री आवश्यक है। एक विज्ञापन एजेंसी में एक फोटोग्राफर की औसत वार्षिक आय लगभग 6,00,000 रुपये है। विज़ुअलाइज़र: एक विज़ुअलाइज़र चित्रों, छवियों, लिखित पाठ को रूपांतरित करता हैग्राफिक दृश्य जो आकर्षक और समझने में आसान हों। छवियों को विज़ुअलाइज़र द्वारा बढ़ाया जाता है और विशेष प्रभावों को जोड़ा जाता है। ग्राफ़िक्स 2-आयामी, 3-आयामी या 4-आयामी हो सकते हैं। एक पेशेवर विज़ुअलाइज़र के पास महान डिज़ाइन रचनात्मकता होनी चाहिए। इसके अलावा, डिजाइन में स्नातक की डिग्री या अन्य समकक्ष पाठ्यक्रम आवश्यक है। भारत में एक विज़ुअलाइज़र की वार्षिक आय लगभग 3,00,000 रुपये है। टाइपोग्राफर: आम तौर पर, टाइपोग्राफी प्रकार को व्यवस्थित करने और डिजाइन करने की कला और तकनीक है। यह प्रचार सामग्री और विज्ञापन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उपयोग अक्सर पाठकों का ध्यान किसी विशेष विज्ञापन की ओर आकर्षित करने के लिए किया जाता है। तो यह एक टाइपोग्राफर का काम है। इस व्यवसाय के लिए, आपको ग्राफिक डिज़ाइन या संबंधित क्षेत्र में एसोसिएट की डिग्री हासिल करनी होगी। इस व्यवसाय के लिए औसत वार्षिक वेतन लगभग 4,00,000 रुपये है। कार्यकारी नौकरियाँ: विज्ञापन में कार्यकारी नौकरियों में विभिन्न पेशे शामिल होते हैं। ये नौकरियाँ प्रबंधन कार्य पर आधारित होती हैं। ग्राहक सेवा कार्यकारी: ग्राहक सेवा अधिकारी बाहरी ग्राहकों और उनके संगठन के आंतरिक विभाग के बीच बिचौलिए के रूप में कार्य करते हैं। वे फोन, ईमेल आदि पर ग्राहकों से बातचीत करके उनकी समस्याओं से निपटते हैं। उनका मुख्य लक्ष्य ग्राहक को अपनी कंपनी के उत्पाद या सेवा से संतुष्ट करना है। वे विज्ञापन अभियानों की निगरानी करते हैं और ग्राहक की बिक्री बढ़ाने के लिए नए विचार विकसित करते हैं। ग्राहक सेवा कार्यकारी के रूप में काम करने के लिए विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है जैसे अच्छे प्रबंधन कौशल, विश्लेषणात्मक दिमाग के साथ अच्छी निर्णय लेने की शक्ति। क्लाइंट सर्विसिंग एक्जीक्यूटिव के रूप में काम करने के लिए वित्त, अर्थशास्त्र, विज्ञापन, वित्त या व्यवसाय में स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होती है। इस पद का सालाना सैलरी पैकेज करीब 2,40,000 रुपये है. बाज़ार अनुसंधान विश्लेषक: बाज़ार अनुसंधान विश्लेषक उपभोक्ताओं और अन्य प्रतिस्पर्धियों से संबंधित डेटा एकत्र करता है और उसका विश्लेषण करता है। विश्लेषक की मुख्य भूमिका बाजार की स्थितियों की जांच करना और उत्पाद की बिक्री बढ़ाने में मदद करना है। वे लोगों की ज़रूरतों, ग्राहक क्या चाहते हैं और किस कीमत पर चाहते हैं, इसका विश्लेषण करते हैं और इन मुद्दों पर कंपनी की मदद करते हैं। एक विश्लेषक के रूप में काम करने के लिए एक विश्लेषक के पास आँकड़ों के पैटर्न को नोटिस करने की क्षमता होनी चाहिए, साथ ही विवरण पर सटीकता और ध्यान होना चाहिए। ग्राहकों की ज़रूरत को समझना कि वे अन्य प्रतिस्पर्धियों की तुलना में आपकी कंपनी को क्यों चुनते हैं और आवश्यक सेवा प्रदान करते हैं, विश्लेषक का उद्देश्य है। इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए मार्केट रिसर्च या संबंधित क्षेत्र में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। एक विश्लेषक का सालाना औसत वेतन लगभग 3,51,000 रुपये है। मीडिया नियोजन/अनुसंधान विश्लेषक: नियोजन विभाग की मुख्य भूमिका उस समय शुरू होती है जब विज्ञापन का काम पूरा हो जाता है। वे समाचार पत्र, टीवी, रेडियो, पत्रिकाओं और अन्य विज्ञापन स्रोतों में योजना, शेड्यूलिंग, समय और स्थान के लिए जिम्मेदार हैं। इस विभाग का लक्ष्य बजट में विज्ञापन को दर्शकों तक पहुंचाना है। इस पद के लिए प्रसारण और मीडिया या संबंधित क्षेत्र में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। इस स्ट्रीम में वार्षिक आय लगभग 5,00,000 रुपये है। विज्ञापन खाता प्रबंधक: विज्ञापन खाता प्रबंधक विज्ञापन के संबंध में लागत अनुमान तैयार करता है और ग्राहक को विज्ञापन विचार भी प्रस्तुत करता है। वे यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार हैं कि कंपनी ग्राहक की ज़रूरतों को पूरा करती है या नहीं। दरअसल, वे ग्राहक और संगठन के बीच पुल की तरह हैं। उन्हें समस्याओं का समाधान अंदर ही करना होगाखाता प्रबंधन टीम और आंतरिक और बाह्य संचार का प्रबंधन करें और परियोजना को अंत तक चलाएं। विज्ञापन खाता प्रबंधक बनने के लिए विज्ञापन में स्नातक की डिग्री या इसके समकक्ष डिग्री आवश्यक है। अकाउंट मैनेजर का सालाना सैलरी पैकेज लगभग 5,50,000 रुपये है. आजकल व्यवसाय का प्रभाव बढ़ाने के लिए विज्ञापन आवश्यक है। इसलिए, इस लाइन में काम करना युवाओं के लिए एक अच्छा विकल्प है क्योंकि समय के साथ यह क्षेत्र विकसित हो रहा है। साथ ही, इस क्षेत्र में करियर चुनने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं।

संपादक की कलम से

भारत विरोधी बांग्लादेश

बांग्लादेश के साफ संकेत हैं कि अब वहां कट्टरपंथियों और भारत-विरोधी ताकतों का वर्चस्व होगा। आतंकवाद का खतरा बढ़ेगा। बांग्लादेश में भी तालिबान सक्रिय होंगे। वहां के प्रधानमंत्री आवास को आम जनता के लिए इस कदर खोल रखा गया है मानो कोई मेला लगा हो! कुछ युवा चेहरों की अश्लील, असभ्य, विद्रूप मानसिकता सार्वजनिक हुई है, जब उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की ब्रा और अंतर्वस्त्र सरेआम लहराए हैं। ऐसे युवा कुछ भी हो सकते हैं, लेकिन आंदोलनकारी छात्र नहीं हो सकते। वे बेशर्म जमात भी हो सकते हैं, लेकिन अपने ही मुल्क का अपमान कर रहे हैं। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) और जमात-ए-इस्लामी दोनों ही कट्टरवादी दल हैं और पाकपरस्त भी हैं। अंतरिम सरकार बनने से पहले ही दोनों दलों के करीब 9000 कार्यकर्ताओं को जेलों से रिहा कर दिया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया और उनके पुत्र तारिक रहमान की सरपरस्ती में इन दलों ने आम जनसभा को संबोधित भी किया है। तारिक हत्या के तीन मामलों में उम्रकैद के सजायाफ्ता हैं, लेकिन वह लंदन में स्वनिर्वासन में थे। अभी ढाका लौट कर आए हैं, तो अदालतें फिलहाल खामोश और निष्क्रिय हैं। प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार में मंत्री रहे 10 और अन्य बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है। दरअसल बीएनपी और जमात के साथ पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई ने 'सौदेबाजी' की है कि शेख मुजीब की सियासी विरासत की प्रतीक 'अवामी लीग' पार्टी का नामोनिशां ही मिटा दिया जाए, ताकि 1971 की बगावत की मुकम्मल सजा दी जा सके। हसीना के बांग्लादेश छोड़ कर चले जाने के साथ ही शेख मुजीब की सियासी विरासत तो समाप्त हो गई। पाकिस्तानी फौज गदगद है और लड्डू खा रही है। ऐसी सूचनाएं भी हैं कि आईएसआई लंदन में तारिक रहमान और जमात के नेतृत्व के साथ 2018 से ही 'तख्तापलट' की साजिश रच रही थी, लेकिन अभी तक नाकाम रही थी। मौजूदा आंदोलन का आवरण छात्रों का था, लेकिन उनकी आड़ में जमात और बीएनपी के कार्यकर्ताओं ने ही आंदोलन को 'तख्तापलट' का रूप दिया था।

जमात का छात्र संगठन ही आंदोलन और बगावत के पीछे सक्रिय था। बेशक शेख हसीना को मुल्क छोड़े तीन दिन गुजर चुके हैं, लेकिन बांग्लादेश के हालात अब भी सामान्य नहीं हुए हैं। करीब 125 लोग बीते एक दिन में मारे गए हैं। कुल मौतों की संख्या 450 से अधिक हो गई है। चूंकि प्रधानमंत्री के तौर पर हसीना भारत-समर्थक थीं। दोनों देशों ने कई साझा परियोजनाएं शुरू कीं और पुराने विवादों को भी खत्म किया। अब अंतरिम सरकार के दौर में कट्टरपंथी और भारत-विरोधी ताकतें ऐलानिया कह रही हैं कि उन परियोजनाओं की जांच और समीक्षा की जाएगी। बांग्लादेश के एक तबके का भारत-विरोध इनसे स्पष्ट होता है कि बीते तीन दिनों में ही 30 हिंदू मंदिर तोड़ दिए गए। उनमें आस्था की देव-मूर्तियों को भी खंडित कर ध्वस्त किया गया। मंदिरों में आग लगा दी गई। हिंदुओं के 300 से अधिक घर और उनकी दुकानें भी तोड़ी गईं और आगजनी भी की गई। बीते कुछ सालों के दौरान करीब 3600 हिंदू मंदिरों को तोड़ा जा चुका है और उन्हें आग के हवाले किया जाता रहा है। क्या बांग्लादेश हिंदू-विरोधी भी हो रहा है? बांग्लादेश में हिंदुओं की आबादी अब मात्र 7.9 फीसदी है, जबकि 1971 में देश-निर्माण के वक्त यह आबादी करीब 23 फीसदी थी। बेशक हिंदू घोर अल्पसंख्यक हैं। क्या मोदी सरकार प्रभावी हस्तक्षेप करेगी? बीएनपी की सरकार पहले भी बांग्लादेश में रही है। जमात भी भारत का विरोध करती रही है। जमात तो 1971 में भी पाकिस्तानपरस्त था और बांग्लादेश बनाने के अभियान के खिलाफ था। यह भी हकीकत है कि बांग्लादेश कई मामलों में भारत के भरोसे रहा है। हकीकत यह भी है कि अब बांग्लादेश में करीब 80 फीसदी सैन्य हथियार चीन से आते हैं। क्या नई सरकार चीन के साथ अपने संबंध मजबूत करेगी और भारत का खुलेआम विरोध करेगी? भारत के लिए घुसपैठ और शरणार्थियों का आना भी बेहद गंभीर चुनौती है।

राय

रिश्तों के धागे

रिश्ते जिंदगी की कीमती धरोहर होते हैं। कुछ रिश्ते कुदरत बनाती है, कुछ हम खुद बनाते हैं। मगर रिश्तों को बनाने से ज्यादा उसका निर्वहन करना मुश्किल होता है। यही कारण है कि कई बार हमारे खुद के द्वारा चयनित रिश्तों में भी खटास आने लगती है और रिश्ते टूटने के कगार पर आ जाते हैं। वजह कोई भी हो, जब रिश्ता टूटता है तो तकलीफ दोनों तरफ होती है। पात जब डाली से विलग होता है, तो दर्द टहनी और पात दोनों को ही होता है । ठीक वैसे ही रिश्ते होते हैं। हर व्यक्ति के भीतर संवेदनाएं हैं। फर्क इतना है कि कौन दूसरों की संवेदनाओं को कितना सहेज पाता है। समय रहते अगर किसी समस्या का समाधान न हो तो वह विकराल रूप ले लेती है। बंधन कोई भी हो, उसे खोलना ही होता है। इसी तरह रिश्तों का बंधन अगर समय से न खुले तो वह गांठों का बंधन हो जाता है। रिश्तों में झुकना रिश्ते के निर्वहन की प्राथमिक पाठशाला है। झुककर न केवल रिश्ते को बचाया जा सकता है, बल्कि उससे रिश्ते की प्रगाढ़ता भी बढ़ाई जा सकती है। हां, यह जरूर है कि यह झुकना सम्मान की कीमत पर नहीं होना चाहिए। वरना जिस रिश्ते को बचाने के लिए झुका जाता है, उसमें सम्मान का अभाव आखिर रिश्ते के जीवन को छीन लेता है। आज विकास की इस दौड़ में हमने बहुत कुछ हासिल तो कर लिया, लेकिन बहुत कुछ पीछे भी छूट गया। जो छूटा है, वह इतना कीमती है कि उसकी कीमत हम चुका नहीं पा रहे हैं। आज संयुक्त परिवार विलुप्तप्राय होते जा रहे हैं, जो कभी हमारी जिंदगी की सीख के लिए प्राथमिक पाठशाला हुआ करते थे । एकल परिवार वाले रिश्तों के दायरे तो सीमित होते ही गए, साथ ही बांटकर खाने वाली प्रवृत्ति भी खत्म होती जा रही है। संयुक्त परिवार में जहां मिल- बांटकर खाने की आदत होती है, वहीं एकल परिवार में 'मुझे क्या खाना है' या अपनी इच्छा को सर्वोपरि मान लिया जाता है, जो भविष्य में रिश्तों में सामंजस्य बिठाने में बाधक होता है । महिलाओं का आत्मनिर्भर होना समाज के लिए बड़ी उपलब्धि ही है, लेकिन समाज इसे इसी रूप में नहीं लेता है । जबकि अगर महिला कामकाजी हो तो पुरुष को भी घर के कामकाज में हाथ बंटाना एक सहज स्थिति होनी चाहिए । आजकल सबसे बड़ी समस्या आपसी सामंजस्य की है। पारिवारिक समस्या तो पीछे छूट गई, पति-पत्नी का आपसी सामंजस्य ही नहीं बैठ पा रहा है, जो समाज के लिए बहुतहैं। बड़ी चुनौती है। प्रेम में आकर्षण होना अलग बात है और यथार्थ के धरातल से रूबरू होना अलग बात। यही वजह है कि प्रेम विवाह भी असफल हो रहे हैं। जबकि पति-पत्नी दांपत्य जीवन के दो पहिये हैं और एक दूसरे के पूरक विडंबना यह है कि आजकल दंपतियों के बीच तलाक आम होता जा रहा है। हालांकि इस तरह के टूटते रिश्तों के लिए समूचा परिवेश ही दोषी होता है। अगर दोनों ही एक दूसरे की भावनाओं और परिस्थितियों को समझें, तो रिश्तों को टूटने से बहुत हद तक बचाया जा सकता है। आवश्यकता से अधिक अपेक्षा भी रिश्तों में कड़वाहट लाती है, हम जितने स्वावलंबी होंगे, उतना ही हमारे और हमारे रिश्ते के हित में होगा। इसलिए मां-बाप को अपने बच्चों को बचपन से ही स्वावलंबी बनाना चाहिए। टूटते रिश्ते तो समाज के लिए अफसोसनाक हैं ही, इसके अलावा खोखले रिश्ते भी समाज का हिस्सा हैं, जहां रिश्ते कानूनी तौर पर टूटे नहीं हैं, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर सिर्फ नाम के ही रिश्ते होते हैं। एक ही छत के नीचे रिश्तों में कड़वाहट घुली होती है। ऐसे रिश्ते भी आज के समाज का बहुत बड़ा हिस्सा हैं। उन्हें टूटने से पहले बचाना बहुत आवश्यक है। कुछ पहल अपनी ओर से करनी चाहिए और इसके बावजूद रिश्ता जीवंत नहीं हो पा रहा हो, तो अपने बड़ों को साथ लेना चाहिए ।

नाइट्रोजन प्रदूषण के बढ़ते खतरे

विजय गर्ग

नाइट्रोजन एक आवश्यक तत्त्व है, लेकिन नाइट्रोजन का अत्यधिक स्तर पारिस्थितिकी तंत्र, मानव स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकता है। 1940 और 1950 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति एक महत्त्वपूर्ण कृषि परिवर्तन था, जिसमें खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए उच्च उपज वाली फसल किस्मों, सिंचाई और उर्वरकों की शुरुआत हुई। हरित क्रांति ने अपने लक्ष्य हासिल कर लिए, पर उसके अनपेक्षित पर्यावरणीय परिणाम हुए, जिसमें नाइट्रोजन प्रदूषण भी शामिल है। अधिक उपज लेने के लिए किसानों ने बड़ी मात्रा में नाइट्रोजन उर्वरकों का इस्तेमाल किया, जो अक्सर मिट्टी की अवशोषित करने की क्षमता से अधिक थे।

नाइट्रोजन उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के कारण मिट्टी, पानी और हवा में नाइट्रोजन प्रदूषण, प्राकृतिक पोषक चक्रों में व्यवधान, जैव विविधता में कमी, मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

नाइट्रोजन प्रदूषण के कारण जलमार्गों में 'यूट्रोफिकेशन' (शैवाल की अत्यधिक वृद्धि), जलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों में मृत क्षेत्र (कम आक्सीजन स्तर), मिट्टी का क्षरण और अम्लीकरण, वायु प्रदूषण (नाइट्रोजन आक्साइड, कण पदार्थ), जलवायु परिवर्तन (नाइट्रस आक्साइड एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है), वहीं नाइट्रोजन प्रदूषण के कारण, श्वसन संबंधी समस्याएं (अस्थमा, फेफड़ों की बीमारी), कैंसर का जोखिम (नाइट्रोसामाइन, नाइट्रोजन प्रतिक्रियाओं का एक उपोत्पाद), तंत्रिका संबंधी प्रभाव (नाइट्रोजन डाइआक्साइड जोखिम) उत्पन्न हुए हैं। नाइट्रोजन प्रदूषण के कारण जल उपचार लागत में वृद्धि हुई है। फसल की पैदावार और कृषि उत्पादकता में कमी आई है, बुनियादी ढांचे को नुकसान हुआ है, स्वास्थ्य सेवा लागत बढ़ी है।

बीसवीं सदी तक, पर्यावरण पर नाइट्रोजन के प्रभावों को अच्छी तरह से समझा नहीं गया था। उत्पादकता पर कृषि का ध्यान, हरित क्रांति ने गहन उर्वरक उपयोग के पर्यावरणीय प्रभावों को अनदेखा करते हुए फसल की पैदावार बढ़ाने को प्राथमिकता दी गई। अपर्याप्त आंकड़े और निगरानी की कमी के चलते नाइट्रोजन प्रदूषण और इसके प्रभावों को चिह्नित करना मुश्किल हो गया। नाइट्रोजन प्रदूषण सार्वजनिक चिंता का विषय नहीं था, और इस विषय पर शिक्षा सीमित थी।

आर्थिक वृद्धि और विकास को पर्यावरण संबंधी चिंताओं से अधिक प्राथमिकता दी गई। सीमित अंतरराष्ट्रीय सहयोग, नाइट्रोजन प्रदूषण को संबोधित करने के लिए वैश्विक सहयोग सीमित था, जिससे सामूहिक कार्रवाई में बाधा उत्पन्न हुई। हालांकि, हाल के दशकों में, बढ़ी हुई वैज्ञानिक समझ, बढ़ती सार्वजनिक जागरूकता और नीतिगत विकास ने नाइट्रोजन प्रदूषण को समझने में मदद की है। सतत प्रथाओं, विनियमन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर बढ़ते ध्यान के साथ प्रयासों में सुधार जारी है। दुनिया भर की सरकारों ने नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम लागू किए हैं। अमेरिका की राष्ट्रीय पोषक तत्त्व प्रबंधन नीति राज्यों को जलमार्गों में नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए पोषक तत्त्व प्रबंधन योजनाएं विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यूरोपीय संघ का 'नाइट्रोजन 'न्यूनीकरण कार्यक्रम' सदस्य राज्यों के लिए कृषि और उद्योग से नाइट्रोजन उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य निर्धारित करता है। भारत सरकार का उर्वरक प्रबंधन अधिनियम, उर्वरक के उपयोग को नियंत्रित करता और नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए कुशल प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

विभिन्न देशों में ऐसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। ये कार्यक्रम विनियमन, शिक्षा और प्रोत्साहन के माध्यम से नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के प्रयास करते हैं। नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए टिकाऊ कृषि पद्धतियां, औद्योगिक प्रक्रिया सुधार, अपशिष्ट जल प्रबंधन आदि अपनाए जाते हैं। नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें व्यक्ति, समुदाय और सरकारें एक साथ मिलकर काम करें। नैनो यूरिया एक आशाजनक नवाचार है, जो छोटी सी बोतल में बंद तरल नाइट्रोजन युक्त कृत्रिम उर्वरक है। यूरिया में सर्वाधिक 46.6 फीसद नाइट्रोजन होता है। नैनो यूरिया एक नैनो तकनीक आधारित उर्वरक है, जो फसलों को अधिक कुशलता से नाइट्रोजन प्रदान करता है, जिससे पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले अतिरिक्त नाइट्रोजन को कम किया जा सकता है। नैनो यूरिया के नैनोकण केवल तभी नाइट्रोजन छोड़ते हैं जब पौधे को उसकी आवश्यकता होती है। नैनो यूरिया की दक्षता का मतलब है कि किसान कम अनुप्रयोग दरों का उपयोग कर सकते हैं, जिससे पर्यावरण में जारी नाइट्रोजन की कुल मात्रा कम हो जाती है। नैनो यूरिया लाभकारी सूक्ष्मजीवों को बढ़ावा देकर और मिट्टी के अम्लीकरण को कम करके मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने मदद कर सकता है, जो नाइट्रोजन प्रदूषण कम करने में योगदान कर सकता है।

सरकारों और नियामक निकायों को नैनो यूरिया के सुरक्षित उपयोग और पर्यावरणीय प्रभाव के लिए दिशानिर्देश और मानक स्थापित करने चाहिए। पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरण पर नैनो यूरिया के दीर्घकालिक प्रभावों को समझने के लिए निरंतर शोध की आवश्यकता है। व्यापक रूप से अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए नैनो यूरिया की लागत और उपलब्धता पारंपरिक उर्वरकों के साथ प्रतिस्पर्धी होनी चाहिए। कुल मिलाकर, नैनो यूरिया में नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने में एक मूल्यवान उपकरण होने की क्षमत है, लेकिन इसका प्रभाव जिम्मेदार विकास, तैनाती और प्रबंधन पर निर्भर करेगा। नाइट्रोजन प्रदूषण को कम करने के लिए कुछ रणनीतियां अपनाई जा सकती हैं: सतत कृषि, परिशुद्ध कृषि और फसल चक्र का उपयोग करने की कृषकों को सलाह दी जानी चाहिए।

अपशिष्ट जल उपचार अवसंरचना को उन्नत करने की सलाह, नाइट्रोजन हटाने की तकनीकें लागू करने की सलाह, जल संरक्षण को बढ़ावा, औद्योगिक प्रक्रियाएं, कुशल दहन तकनीकें लागू करने की सलाह, नाइट्रोजन कम करने वाले उत्प्रेरकों का उपयोग, नाइट्रोजन उत्सर्जन को कम करने के लिए औद्योगिक प्रक्रियाओं का अनुकूलन, वाहन उत्सर्जन, इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों को बढ़ावा देना, उत्सर्जन नियंत्रण और उत्प्रेरक कन्वर्टर को लागू करना, टिकाऊ परिवहन विकल्पों को प्रोत्साहित करना, उचित अपशिष्ट निपटान और पुनर्चक्रण को लागू करना, कचरा ढलाव में खाद्य अपशिष्ट और कार्बनिक पदार्थों को कम करने की सलाह, शिक्षा और जागरूकता, नाइट्रोजन प्रदूषण के बारे में जागरूकता बढ़ाना, नाइट्रोजन उत्सर्जन को विनियमित करने के लिए नीतियों का विकास और कार्यान्वयन, प्रोत्साहन और शिक्षा के माध्यम संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करना, मृदा संरक्षण, संरक्षण जुताई और बिना जुताई वाली खेती को लागू करना, नाइट्रोजन-फिक्सिंग फलियां लगाना, मृदा स्वास्थ्य और कार्बन पृथक्करण को बढ़ावा देना। जल-कुशल प्रथाओं को बढ़ावा देना, रिसाव को ठीक करना और बुनियादी ढांचे को उन्नत करना, जल - बचत प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित करना।

मौजूदा प्रौद्योगिकियों और प्रथाओं में सुधार करना, संधारणीय कृषि और उद्योग नवाचार को प्रोत्साहित करना। इन रणनीतियों को लागू करके नाइट्रोजन प्रदूषण और पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य तथा अर्थव्यवस्था पर इसके हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते हैं।

वैदिक गणित और छात्रों के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता के बारे में सब कुछ

सूत्र और उप-सूत्र अनिवार्य रूप से शब्द समीकरण हैं जो गणित की समस्याओं को हल करने के तर्क को समझाते हैं जो बहुत से लोगों के लिए समय लेने वाली और व्याख्या करने में कठिन होती। वे जोड़-घटाव-गुणा-और भाग गणना से लेकर बीजगणित, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, संभाव्यता, कैलकुलस इत्यादि तक प्रारंभिक और उन्नत गणितीय अवधारणाओं का विस्तार करते हैं, न केवल गणित, बल्कि इंजीनियरिंग, चिकित्सा और खगोल विज्ञान में भी अनुप्रयोगों के साथ। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य अपने पाठकों को स्मृति तकनीकों से लैस करना है जो उन्हें गणितीय समस्याओं को तेजी से, अधिक आसानी से और पूरी तरह से उनके दिमाग में हल करने में मदद कर सकते हैं। संक्षेप में, वैदिक गणित अनुशासन अपने अभ्यासकर्ताओं के लिए गणित के विषय को उजागर करता है - चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो। यह देखते हुए कि यह एक सम्मानित हिंदू भिक्षु द्वारा लिखा गया था, वह अवधि जब इसे लिखा गया था, और यह तथ्य भी कि इसे मरणोपरांत प्रकाशित किया गया था, पुस्तक के भीतर की कुछ तकनीकों को वेदों के भीतर अंकगणितीय पद्धतियों से बनाया और प्राप्त किया जा सकता है। कई अध्ययनों से पता चलता है कि 25 से 80% छात्र गणित की चिंता से पीड़ित हैं जो वयस्कता तक बढ़ सकती है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि कोई भी प्रणाली जो बच्चों को किसी ऐसे विषय में महारत हासिल करने में मदद करती है जिसके बारे में उन्हें लगता है कि वे केवल इसमें ही उलझ सकते हैं, उसे उनका समर्थन मिलेगा। , जनरेशन अल्फा, विशेष रूप से, एक टेक-चार्ज पीढ़ी है जब यह आता है कि वे क्या, कैसे और कब सीखेंगे, शायद परिष्कृत उपकरणों और प्रौद्योगिकियों तक पहुंच के अभूतपूर्व स्तर के कारण। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह पीढ़ी बड़े पैमाने पर वैदिक गणित को अपना रही है। हालांकि यह सच है कि वैदिक गणित अनुशासन पारंपरिक प्रक्रियाओं की तुलना में लोकप्रिय डॉट और क्रिस-क्रॉस विधियों का उपयोग करके बच्चों को 8-10 गुना तेजी से और अधिक सटीक रूप से गणित करने में मदद कर सकता है, लेकिन गति और चपलता ही इस अनुशासन को सीखने का एकमात्र लाभ नहीं है। वैदिक गणित में महारत हासिल करने से छात्रों को कई तरीकों से अपनी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को तेज करने में मदद मिल सकती है: रचनात्मकता, याद रखना नहीं: पारंपरिक गणित के विपरीत, जो गणित की तालिकाओं को याद करने को एक पूर्व शर्त बनाता है, वैदिक गणित तकनीकों के लिए छात्रों को केवल नौ तक की तालिकाओं को जानने की आवश्यकता होती है। वैदिक गणित का फोकस किसी समस्या को मानसिक रूप से हल करने के वैकल्पिक तरीकों को देखने के लिए छात्र के दिमाग को खोलना है, जिससे रचनात्मक समाधान हो सकते हैं क्योंकि बच्चों को उन पैटर्न को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो कठोर सूत्रों में निहित नहीं हैं। बेहतर संज्ञानात्मक कार्य: रचनात्मक लचीलापन और गणित के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने से बच्चे के दिमाग में न्यूरोप्लास्टिकिटी बढ़ती है और उनके मस्तिष्क को उनके सामने प्रस्तुत समस्या की रूपरेखा से परे देखने की चुनौती मिलती है। छात्र गणित को अपनी दुनिया में देखना शुरू करते हैं, जो उनके लिए विषय को सैद्धांतिक से अधिक व्यावहारिक बनाने में मदद करता है। बेहतर एकाग्रता: एक बार जब कठोर, समझ से परे नियमों की बाधा टूट जाती है और छात्र अपनी दुनिया में वैदिक गणित के सरल सिद्धांतों का उपयोग करके गणित को कार्य में 'देख' सकते हैं, तो इससे विषय पर संलग्न होने और ध्यान केंद्रित करने की उनकी क्षमता में सुधार होता है। प्रतिस्पर्धात्मक लाभ: जब छात्र गणित में अधिक तेज़ और फुर्तीले हो जाते हैं, तो इससे भविष्य में आने वाली कई शैक्षणिक चुनौतियों का

सामना करने की उनकी क्षमता में आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही यह आत्मविश्वास भी बढ़ता है कि वे कुछ करने के नए तरीके सीख सकते हैं। पुराने को पूरक करें जो वे ऐतिहासिक रूप से रहे हैंपढ़ाया। वैदिक गणित न केवल उन्हें स्कूल परीक्षणों और परीक्षाओं में बेहतर अंक प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि छात्रों को वैश्विक प्रदर्शन के अवसर भी प्रदान करता है। एक मजबूत गणितीय आधार छात्रों को उन क्षेत्रों में सीखे गए सिद्धांतों के क्रॉस-फ़ंक्शनल अनुप्रयोग में सहायता करता है जो शुद्ध शिक्षाविदों से परे हैं। इसके अलावा, स्कूल और कॉलेज में उच्च गणित स्कोर छात्रों के लिए करियर के रास्ते और प्रीमियम विश्वविद्यालयों में प्रवेश के अवसर खोल सकते हैं। संक्षेप में, वैदिक गणित का गहन अध्ययन न केवल छात्रों को अल्पावधि में अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करता है, बल्कि, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि, उन्हें अच्छी तरह से विकसित और आत्मविश्वासपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने में मदद करता है जो उन्हें लंबे समय तक आगे बढ़ने में अच्छी स्थिति में रखेगा- जीवन की महत्वाकांक्षाएँ।

अब कैसे होगा घर का रेनोवेशन? होम लोन टॉप-अप पाने में आएगी मुश्किल, आरबीआई ने खींचे बैंकों के कान

परिवहन विशेष न्यूज

रिजर्व बैंक ने टॉप-अप होम लोन के बढ़ते ट्रेंड पर चिंता जाहिर की है। बैंकों और एनबीएफसी को लोन के इस्तेमाल की निगरानी करने की सलाह दी गई है। आरबीआई ने यह सुनिश्चित करने को कहा है कि ये लोन सट्टा निवेश में उपयोग न हों। इसका उद्देश्य वित्तीय स्थिरता को बनाए रखना है।

नई दिल्ली: भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने टॉप-अप होम लोन में हालिया बढ़ोतरी पर चिंता जताई है। RBI का मानना है कि लोग इस पैसे का इस्तेमाल शेयर बाजार जैसे सट्टा निवेश में कर रहे हैं। रेगुलेटर ने बैंकों से सतर्क रहने और यह जांच करने को कहा है कि टॉप-अप होम लोन किस मकसद से लिया जा रहा है।

मौद्रिक नीति समिति की बैठक में RBI गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा, 'तीसरा मुद्दा जो हमारा ध्यान आकर्षित कर रहा है वह है होम इक्विटी लोन या टॉप-अप हाउसिंग लोन का जैसा कि इन्हें भारत में कहा जाता है। ये तेजी से बढ़ रहे हैं। बैंक और NBFC गोल्ड लोन जैसे अन्य कर्जों पर भी टॉप-अप लोन दे रहे हैं। यह देखा गया है कि कुछ संस्थाएं लोन-टू-वैल्यू (LTV) रेशियो, रिस्क वेट और फंड के इस्तेमाल की निगरानी से संबंधित नियामक नियमों का सख्ती से पालन नहीं कर रही हैं। ऐसी प्रथाओं से उधार ली गई धनराशि गैर-उत्पादक क्षेत्रों में या सट्टा उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। इसलिए, बैंकों और NBFC को सलाह दी जाती है कि वे ऐसी प्रथाओं की समीक्षा करें और सुधारात्मक कार्रवाई करें।'

अभी क्या करते हैं बैंक?

आमतौर पर लोग होम लोन लेते समय LTV के तहत अधिकतम लोन लेने की कोशिश करते हैं। समय के साथ प्रॉपर्टी की कीमत बढ़ जाती है। अधिक लोन लेने की गुंजाइश बन जाती है। जब घर की कीमत बढ़ जाती है और LTV अनुपात अनुमति देता है तो बैंक टॉप-अप होम लोन देते हैं। अगर किसी ने शुरुआत में कम लोन लिया था तो वे LTV के हिसाब से टॉप-अप ले सकते हैं।

उदाहरण के लिए अगर आपने 50 लाख रुपये की संपत्ति पर 80% LTV के हिसाब से 40 लाख रुपये का होम लोन लिया है और अगले 3 साल में कीमत बढ़कर 70 लाख रुपये हो जाती है तो आपकी लोन लेने की पात्रता 80% LTV के हिसाब से 56 लाख रुपये हो जाती है। तो यह आपको टॉप-अप होम लोन के रूप में 16 लाख रुपये का अतिरिक्त लोन लेने की अनुमति देगा। अगर कर्जदार ने शुरू में पूरा LTV लोन नहीं लिया है तो वह भी टॉप-अप के रूप में बाकी रकम ले सकता है।

एक्सपर्ट्स की क्या है राय?

BankBazaar.com के सीईओ आदिल शेट्टी कहते हैं कि स्पष्ट किया गया है कि सिर्फ कुछ संस्थाओं तक ही यह सीमित है। इसे सुधारात्मक उपाय और सट्टा गतिविधियों को उधार देने से बचने के लिए एक नरम चेतावनी के रूप में देखा जा सकता है।

आमतौर पर टॉप-अप होम लोन उस घर के रेनोवेशन और अपग्रेडेशन के लिए दिया जाता है जिस पर पहले से ही होम लोन चल रहा है। आईसीआईसीआई बैंक अपनी वेबसाइट पर कहता है, 'इस लोन का इस्तेमाल आपके घर को फर्निश करने, आपके घर के रेनोवेशन और यहां तक कि व्यक्तिगत खर्चों के लिए भी किया जा सकता है।'

इकनॉमिक टाइम्स के साथ बातचीत में एंड्रोमेडा सेल्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन प्राइवेट लिमिटेड के सह-सीईओ राहुल कपूर कहते हैं कि आमतौर पर टॉप-अप लोन के मामले में अंतिम उपयोग परिभाषित नहीं होता है। जबकि ये लोन अक्सर विशिष्ट उद्देश्यों के लिए लिए जाते हैं। हालांकि, कर्ज देने के मानदंड बहुत स्पष्ट रहे हैं कि टॉप-अप होम लोन का उपयोग सट्टा उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता है।

अब UPI के जरिए टैक्स पेमेंट की सीमा 5 लाख रुपये हुई, जानिए क्या होगा फायदा

आरबीआई ने यूपीआई के जरिए टैक्स पेमेंट की सीमा एक लाख रुपये से बढ़ाकर पांच लाख रुपये करने का प्रस्ताव रखा है। आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास में आज यह घोषणा की। वर्तमान में, यूपीआई के लिए टैक्स पेमेंट की सीमा एक लाख रुपये है।

नई दिल्ली: यूपीआई के जरिए अब पांच लाख रुपये तक के टैक्स का भुगतान किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने यूपीआई के जरिए टैक्स पेमेंट की सीमा बढ़ाने की घोषणा की है। आरबीआई के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की मंगलवार को शुरू हुई तीन दिन की बैठक में लिए गए निर्णय की जानकारी देते हुए कहा कि यूपीआई अपनी सहज सुविधाओं से भुगतान का सबसे पसंदीदा तरीका बन गया है। वर्तमान में, यूपीआई के लिए कर भुगतान की सीमा एक लाख रुपये है। दास ने कहा कि विभिन्न उपयोग-मामलों के आधार पर, रिजर्व बैंक ने समय-समय पर पूंजी बाजार, आईपीओ सब्सक्रिप्शन, ऋण संग्रह, बीमा, चिकित्सकीय और शैक्षिक सेवाओं आदि जैसी कुछ श्रेणियों के लिए सीमाओं की समीक्षा की है और उन्हें बढ़ाया है।

दास ने कहा कि चूंकि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर भुगतान सामान्य, नियमित तथा उच्च मूल्य के हैं। इसलिए यूपीआई के जरिए टैक्स पेमेंट की सीमा को एक लाख रुपये से बढ़ाकर पांच लाख प्रति लेनदेन करने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में आवश्यक निर्देश अलग से जारी किए जाएंगे। आरबीआई के अनुसार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस का यूजर बेस आधार 42.4 करोड़ हो गया है। हालांकि इसमें और विस्तार की संभावना है। यूपीआई में 'डेलिगेटेड पेमेंट्स' शुरू करने का भी प्रस्ताव है।

डेलिगेटेड पेमेंट्स

दास ने कहा कि 'डेलिगेटेड पेमेंट्स' से एक व्यक्ति (प्राइमरी यूजर) को प्राथमिक उपयोगकर्ता के बैंक खाते पर किसी अन्य व्यक्ति (सेकेंडरी यूजर) के लिए यूपीआई लेनदेन सीमा निर्धारित करने की अनुमति मिलेगी। इससे देशभर में डिजिटल भुगतान की पहुंच और उपयोग में वृद्धि होने की उम्मीद है। इस संबंध में भी विस्तृत निर्देश जल्द ही जारी किए जाएंगें। इसके साथ ही आरबीआई ने अनधिकृत कंपनियों की जांच के लिए डिजिटल ऋण देने वाले ऐप के सार्वजनिक तौर पर आंकड़े तैयार करने का प्रस्ताव दिया है।

दास ने कहा कि ग्राहकों के हितों की सुरक्षा, डाटा गोपनीयता, ब्याज दरों तथा वसूली प्रक्रियाओं, गलत बिक्री आदि पर चिंताओं से निपटने के लिए दिशानिर्देश दो सितंबर, 2022 को जारी किए गए थे। हालांकि, मीडिया की खबरों ने डिजिटल ऋण देने में बेईमान कंपनियों की मौजूदगी को उजागर किया है जो आरबीआई से संबद्ध होने का झूठा दावा करती हैं।

फर्जी लोन ऐप की पहचान के लिए जल्द आएगा नया सिस्टम - आरबीआई ने अंकुश लगाने के लिए रिपाजिटरी बनाने का किया एलान

अनधिकृत इकाइयों पर लगाम लगाने के लिए RBI ने गुरुवार ने डिजिटल ऋण देने वाले ऐप के सार्वजनिक तौर पर आंकड़े एकत्रित करने को प्रस्ताव दिया। इसके लिए केंद्रीय बैंक ने एक अन्य महत्वपूर्ण कदम में यूपीआई में 'डेलिगेटेड पेमेंट्स' की सुविधा शुरू करने का प्रस्ताव दिया है। आरबीआई ने बैंक तथा एनबीएफसी के डीएलए के आंकड़े (रिपॉजिटरी) तैयार करने का प्रस्ताव किया है।

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने डिजिटल ऋण देने वाले ऐप के सार्वजनिक तौर पर आंकड़े एकत्रित करने का बृहस्पतिवार को प्रस्ताव दिया, ताकि अनधिकृत इकाइयों पर लगाम लगाई जा सके। केंद्रीय बैंक ने एक अन्य महत्वपूर्ण कदम में यूपीआई में 'डेलिगेटेड पेमेंट्स' की सुविधा शुरू करने का प्रस्ताव दिया है।

आरबीआई के गवर्नर ने की बैठक

'डेलिगेटेड पेमेंट्स' एक व्यक्ति (प्राइमरी यूजर) को किसी अन्य व्यक्ति (सेकेंडरी यूजर) को प्राथमिक उपयोगकर्ता के बैंक खाते से एक सीमा तक यूपीआई लेनदेन करने की अनुमति देने में सक्षम बनाएगी।

आरबीआई के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की मंगलवार को शुरू हुई तीन दिन की बैठक में लिए गए निर्णय की जानकारी देते हुए कहा कि केंद्रीय बैंक ने भारत में डिजिटल ऋण परिदृश्य के व्यवस्थित विकास के लिए कई उपाय किए हैं।

उन्होंने कहा कि अनधिकृत डिजिटल ऋण देने वाले ऐप (डीएलए) से जनरेट होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए आरबीआई ने बैंक तथा एनबीएफसी के डीएलए के आंकड़े (रिपॉजिटरी) तैयार करने का प्रस्ताव किया है।

दास ने कहा कि विनियमित संस्थाएं (आरई) इसमें अपने डीएलए के बारे में जानकारी देंगे और समय के साथ उसे अद्यतन भी करेंगी। इस कदम से उपभोक्ताओं को अनधिकृत ऋण देने वाले ऐप की पहचान करने में मदद मिलेगी।

आरबीआई एमपीसी मीट 2024: फिर बढ़ा कर्ज लेने वालों का इंतजार, आरबीआई ने नहीं दी कोई राहत, नौवीं बार नहीं बदला रेपो रेट

परिवहन विशेष न्यूज

लोन की किस्त में राहत का इंतजार कर रहे लोगों को एक बार फिर झटका लगा है। आरबीआई की मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी ने रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं करने का फैसला किया है। यह नौवां मौका है जब कमेटी ने इसे 6.5% पर यथावत रखा है।

नई दिल्ली: भारतीय रिजर्व बैंक की मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी ने रेपो रेट में एक बार फिर कोई बदलाव नहीं किया है। यह लगातार नौवां मौका है जब इसे यथावत रखा है। मंगलवार को शुरू हुई एमपीसी की मीटिंग में लिए गए फैसलों की जानकारी देते हुए आरबीआई के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि रेपो रेट को एक बार फिर 6.5% पर बरकरार रखने का फैसला लिया गया है। केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनने के बाद एमपीसी की यह पहली बैठक और कुल 50वीं बैठक थी। दास ने कहा कि मौद्रिक नीति समिति के छह सदस्यों में से चार ने नीतिगत दर को यथावत रखने के निर्णय के पक्ष में मत दिया। रेपो रेट के यथावत रहने का मतलब है कि आपके लोन की किस्त में कोई बदलाव नहीं होगा।

रेपो रेट वह दर होती है जिस पर आरबीआई बैंकों को लोन देता है। इसके कम होने से आपके होम लोन, पर्सनल लोन और कार लोन की किस्त कम होती है। आरबीआई ने रेपो रेट आखिरी बार बदलाव पिछले साल फरवरी में किया था। तब इसे 0.25% बढ़ाकर 6.50% किया गया था।

दास ने कहा कि समिति ने ग्रोथ को सुनिश्चित करने के लिए महंगाई पर फोकस करने और कीमतों में स्थिरता को सपोर्ट करने का फैसला किया है। मुख्य महंगाई के अप्रैल-मई में स्थिर रहने के बाद जून में इसमें तेजी आई। तीसरी तिमाही में महंगाई में कमी आने की उम्मीद है। ग्लोबल इकनॉमिक आउटलुक में अनईवन एक्सपेंशन दिख रहा है। कुछ देशों के केंद्रीय बैंकों में अपना पॉलिसी रुख सख्त किया है। डेमोग्राफिक शिफ्ट, जियोपॉलिटिकल तनाव और सरकारों के बढ़ते कर्ज से नई तरह की चुनौतियां पैदा हो रही हैं। उन्होंने कहा कि 2024-25 में जीडीपी ग्रोथ रेट 7.2 फीसदी रहने का अनुमान है। इसके पहली तिमाही में 7.1%, दूसरी तिमाही में 7.2%, तीसरी तिमाही में 7.3% और चौथी तिमाही में 7.2% रहने की उम्मीद है।

कब कम होगी महंगाई

दास ने कहा कि एमपीसी ने उदार रुख को वापस लेने का रुख बरकरार रखा है। उन्होंने कहा कि महंगाई में व्यापक रूप से गिरावट का रुख दिख रहा है। तीसरी तिमाही में आधार प्रभाव के लाभ से कुल महंगाई नीचे आ सकती है। हालांकि उन्होंने साथ ही कहा कि महंगाई में खाने-पीने की चीजों की कीमत में तेजी अब भी चिंता का विषय बनी हुई है। परिवारों की खपत से मांग में सुधार को समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि खुदरा महंगाई चालू वित्त वर्ष में 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है। दक्षिण-पश्चिम मॉनसून में तेजी से खुदरा महंगाई में कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। घरेलू मांग बढ़ने से विनिर्माण गतिविधियों में तेजी जारी है और सेवा क्षेत्र की रफ्तार भी बरकरार है। उन्होंने कहा कि कृत्रिम मेधा (AI) जैसी नई प्रौद्योगिकियां वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए नई चुनौतियां पेश करती हैं।

क्या होता है रेपो रेट

हालांकि महंगाई से जुड़ी चिंताओं और आर्थिक वृद्धि की मजबूत रफ्तार को देखते हुए इस बार भी नीतिगत ब्याज दर में किसी बदलाव की कम ही संभावना थी। ब्लूमबर्ग के एक सर्वे में भी 43 में से 42 अर्थशास्त्रियों ने रेपो रेट के यथावत रहने की बात कही थी। जून में खुदरा महंगाई चार महीनों के उच्च स्तर 5.08% पर पहुंच गई थी। खासकर सब्जियों एवं अन्य कुछ प्रमुख खाद्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ने से खुदरा महंगाई बढ़ी है। जुलाई में घर का बना खाना महंगा हो गया है। शाकाहारी यानी वेज थाली 11% महंगी हुई है। वहीं, नॉन-वेज थाली की कीमत में 6% की बढ़ोतरी हुई। प्याज, टमाटर और आलू जैसी सब्जियों के दाम बढ़ने से घर के खाने का खर्च बढ़ा है।

जिस तरह से आप बैंकों से अपनी जरूरतों के लिए लोन लेते हैं, उसी तरह से पब्लिक और कमर्शियल बैंकों भी अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए रिजर्व बैंक से लोन लेते हैं। जिस तरह से आप कर्ज पर ब्याज चुकाते हैं, उसी तरह से बैंकों को भी ब्याज चुकाना होता है। यानी भारतीय रिजर्व बैंक की जिस ब्याज दर पर बैंकों को लोन देता है, वो रेपो रेट कहलाता है। रेपो रेट कम होने का मतलब बैंकों को सस्ता लोन मिलेगा। अगर बैंकों को लोन सस्ता मिलेगा तो वो अपने ग्राहकों को भी सस्ता लोन देंगे। यानी अगर रेपो रेट कम होता है तो इसकी सीधा फायदा आम लोगों को मिलता है। अगर रेपो रेट बढ़ता है तो आम आदमी के लिए भी मुश्किलें बढ़ती है।

अंबानी परिवार नंबर 1, बजाज फैमिली को दूसरा स्थान, यह कैसी लिस्ट में जिसमें अडानी गायब?

मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाले रिलायंस इंडस्ट्रीज ने बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरून इंडिया 2024 की सबसे मूल्यवान पारिवारिक व्यवसाय सूची में पहला स्थान पाया है। बजाज और बिड़ला परिवार दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। कुल 10 परिवारों की संपत्ति 6,009,100 करोड़ रुपये है। इस लिए में प्रशासनिक भूमिका में परिवार के सदस्य का होना जरूरी है।

नई दिल्ली: मुकेश अंबानी और उनका परिवार 2024 बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरुन इंडिया मोस्ट वैल्यूएबल फैमिली बिजनेसेस लिस्ट में पहले नंबर पर हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL) के सीएमडी मुकेश अंबानी की कंपनी की अनुमानित कीमत 309 अरब डॉलर (लगभग 25.75 लाख करोड़ रुपये) है। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 10% है। 20 मार्च, 2024 तक के आंकड़ों के अनुसार यह लिस्ट जारी की गई है। इस लिस्ट में अंबानी परिवार सबसे अमीर है जिसकी कुल संपत्ति 25,75,100 करोड़ रुपये है। दूसरे नंबर पर नीरज बजाज के नेतृत्व वाला बजाज परिवार है। उसकी कुल संपत्ति 7,12,700 करोड़ रुपये है। तीसरे नंबर पर कुमार मंगलम बिड़ला परिवार है, जिसकी कुल संपत्ति 5,38,500 करोड़ रुपये है। गौतम अडानी का परिवार इस लिस्ट में टॉप 10 में शामिल नहीं है क्योंकि यह पहली पीढ़ी का पारिवारिक व्यवसाय है।

कंपनी ने बताया कहा, '2024 बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरुन इंडिया मोस्ट वैल्यूएबल फैमिली बिजनेसेस में पहली पीढ़ी के परिवार शामिल नहीं हैं। अगर पहली पीढ़ी के परिवारों की बात करें तो अडानी परिवार सबसे आगे है। यह परिवार पहली पीढ़ी के उद्यमियों में शामलि है, जिन्हें उनकी अगली पीढ़ी का समर्थन प्राप्त है।'

कितनी है टॉप 10 फैमिली बिजनेसेस की संपत्ति?

बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स और हुरुन इंडिया ने अपनी पहली 2024 बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरुन इंडिया मोस्ट वैल्यूएबल फैमिली बिजनेसेस लिस्ट प्रकाशित की है। यह लिस्ट भारत के सबसे मूल्यवान पारिवारिक व्यवसायों को उनकी कुल संपत्ति के आधार पर रैंक करती है। इसमें विशेष रूप से परिवार के स्वामित्व वाले व्यवसाय शामिल हैं जहां संस्थापक परिवार का वंशज व्यवसाय चलाने या बोर्ड मेंबर के रूप में सक्रिय भूमिका निभाता है।

2024 बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरुन इंडिया मोस्ट वैल्यूएबल फैमिली बिजनेसेस में सूचीबद्ध शीर्ष दस परिवारों ने सामूहिक रूप से 6,009,100 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति अर्जित की है। यह उल्लेखनीय धनराशि भारत के व्यावसायिक परिदृश्य में परिवार के नेतृत्व वाले उद्यमों की ताकत और लचीलापन का प्रमाण है।

2024 बार्कलेज प्राइवेट क्लाइंट्स हुरुन इंडिया मोस्ट वैल्यूएबल फैमिली बिजनेसेस का संयुक्त मूल्य 130 लाख करोड़ रुपये है, जो स्विट्जरलैंड और UAE जैसे देशों की जीडीपी से भी ज्यादा है। अकेले शीर्ष तीन पारिवारिक व्यवसायों का मूल्य 46 लाख करोड़ रुपये है, जो सिंगापुर की जीडीपी के बराबर है।

टॉप 10 सबसे मूल्यवान पारिवारिक व्यवसाय इस प्रकार हैं

1. अंबानी परिवार
2. बजाज परिवार
3. कुमार मंगलम बिड़ला परिवार
4. जिंदल परिवार
5. नादर परिवार
6. महिंद्रा परिवार
7. दानी परिवार, चोक्सी परिवार और वकील परिवार
8. प्रेमजी परिवार
9. राजीव सिंह परिवार
10. मुरुगप्पा परिवार

तेजी से उभरी है हल्दीराम स्नैक्स

हल्दीराम स्नैक्स, जिसका मूल्य 63,000 करोड़ रुपये है, वर्तमान व्यावसायिक परिदृश्य में भारत की सबसे मूल्यवान गैर-सूचीबद्ध कंपनी के रूप में उभरी है। इस सूची में शामिल कंपनियों में से यह उल्लेखनीय है कि उनमें से 15 का नेतृत्व कुशल महिलाएं कर रही हैं। इसके अलावा, परिवार के स्वामित्व वाले उद्यमों के भीतर पेशेवर प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण ट्रेंड स्पष्ट है। कारण है कि 53 कंपनियों में वर्तमान में पेशेवर सीईओ हैं। इन प्रतिष्ठित व्यवसायों की संरचना में गहराई से उतरने पर यह पता चलता है कि कंपनियों का एक बड़ा हिस्सा 85% मुख्य रूप से भौतिक उत्पादों का काम करता है। जबकि बाकी 15% सेवा क्षेत्र के अंतर्गत काम करते हैं। औद्योगिक उत्पाद डोमेन में 28 कंपनियां है। इसके बाद ऑटोमोबाइल और ऑटो कंपोनेंट्स सेक्टर में 23 कंपनियां और फार्मास्युटिकल उद्योग में 22 कंपनियां हैं। यह इस लस्टि में कंपनियों की विविधता को दखिाता है।

लोनधारकों के लिए गुड न्यूज, RBI ने बताया कि नहीं बढ़ेगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

6 अगस्त 2024 से भारतीय रिजर्व बैंक की एमपीसी बैठक शुरू हुई थी। इस बैठक में देश की महंगाई को कंट्रोल करने के लिए कई फैसले लिए गए हैं। एमपीसी बैठक की अध्यक्षता आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास द्वारा किया गया है। इस बैठक के फैसलों का एलान भी आरबीआई गवर्नर ने किया है। इस बार भी समिति ने रेपो रेट को स्थिर रखने का फैसला लिया।

नई दिल्ली। खाद्य वस्तुओं की बढ़ती महंगाई को देखते हुए आरबीआई की मौद्रिक नीति कमेटी की बैठक में बहुमत से रेपो रेट में कोई बदलाव नहीं करने का फैसला किया गया। इस फैसले से सभी प्रकार के लोन की ब्याज दरें भी पहले की तरह ही रहने की संभावना है। लगातार नौवीं बार कमेटी की बैठक में रेपो रेट के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की गई।

दिसंबर से पहले ब्याज दरों में राहत की संभावना नहीं

दूसरी तरफ, घरेलू आर्थिक सूचकांक में मजबूती को देखते हुए वैश्विक मंदी की आहट और भू-राजनीतिक चुनौतियों के बावजूद आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 में 7.2 प्रतिशत की आर्थिक विकास दर के अपने पूर्वानुमान को कायम रखा है। पिछले तीन दिनों से मौद्रिक नीति कमेटी की बैठक चल रही थी। आर्थिक विशेषज्ञों के मुताबिक आगामी दिसंबर से पहले ब्याज दरों में राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

कमेटी की बैठक समाप्त होने के बाद गुरुवार को आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने बताया कि छह सदस्यों वाली कमेटी में चार सदस्यों ने रेपो रेट को पहले की तरह 6.5 प्रतिशत रखने का फैसला किया। दो ने कम करने की बात कही थी। कमेटी इस पक्ष में दिखी कि जीडीपी विकास दर की तेजी को कायम रखने के लिए महंगाई को काबू में रखना जरूरी है।

खुदरा महंगाई दर को चार प्रतिशत तक लाना है लक्ष्य

आरबीआई खुदरा महंगाई दर को चार प्रतिशत तक लाना चाहता है जबकि इस साल अप्रैल-जून में खुदरा महंगाई दर 4.8 प्रतिशत रही। दास ने कहा कि खुदरा महंगाई दर में 46 प्रतिशत हिस्सेदारी खाद्य वस्तुओं की होती है जिनमें बढ़ोतरी का रुख जारी है और यह कुल खुदरा महंगाई को प्रभावित करती है। खाने-पीने की चीजें महंगी होने से आम घर का बजट प्रभावित होने लगता है।

खुदरा महंगाई की कुल दर बढ़ने से श्रमिकों की मजदूरी और जीवनयापन की लागत बढ़ती है। इससे कंपनियां वस्तुओं के दाम बढ़ाने लगती है और कई सेवाएं महंगी होने लगती है। दास ने कहा कि अभी हम खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर में बढ़ोतरी देख रहे हैं, ऐसे में मौद्रिक नीति कमेटी रेपो रेट में बदलाव का साहस नहीं दिखा सकती है।

बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सब्नविस ने बताया कि आरबीआई की सोच से साफ है कि मुख्य लक्ष्य अभी महंगाई दर को कम करना है और ऐसे में दिसंबर से पहले रेट में कटौती की उम्मीद नहीं की जा सकती है। क्योंकि चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में महंगाई दर थोड़ी कम हो सकती है, लेकिन तीसरी तिमाही में फिर से महंगाई दर बढ़ सकती है।

रेपो रेट में बदलाव नहीं लाने का रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का फैसला होम लोन के मार्केट पर गहरा प्रभाव उत्पन्न करेगा। बजट के बाद मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की घोषणा ने अधिक स्थिरता के साथ घर के मालिकों को राहत दी है। दरों का स्थिर बने रहना रियल एस्टेट और लोन सेक्टर के लिए सकारात्मक संकेत है। इससे लोन देने वालों की ओर से घर के खरीददारों के लिए क्रेडिट आउटफ्लो बढ़ेगा।

अतुल मोंगा- सीईओ एवं सह-संस्थापक, बेसिक होम लोन

इसके आगे वह कहते हैं कि हालांकि रेपो दरें कुछ समय के लिए स्थिर बनी हुई हैं, अगले 6-12 महीनों में सेंट्रल बैंक द्वारा दरों में बदलाव की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। दरें बढ़ने से अफॉर्डेबल हाउसिंग सेगमेन्ट को प्रोत्साहन मिलेगा और सरकार के प्रधानमंत्री आवास योजना लक्ष्यों को समर्थन मिलेगा।

भारतीयों की वापसी में मदद कर रहे हैं बांग्लादेशी अधिकारी, नागरिकों को सुरक्षित सीमा पर पहुंचाया जा रहा

परिवहन विशेष न्यूज

बांग्लादेश के कई शहरों में स्थिति अभी भी असामान्य बनी हुई है। हिंदूओं पर निशाना बनाया जा रहा है। इस बीच बांग्लादेश की सेना और वहां के प्रशासनिक अधिकारी भारतीयों को अपने देश लौटने में मदद कर रहे हैं। भारतीय उच्चायोग बांग्लादेश की सेना के सम्पर्क में है। इस कारण बांगलादेशी अधिकारियों ने हरसंभव मदद का आश्वासन दिया है।

नई दिल्ली। ढाका व बांग्लादेश के कई दूसरे शहरों की स्थिति अभी भी सामान्य होने से काफी दूर है। अच्छी बात यह है कि बांग्लादेश की सेना और वहां के प्रशासनिक अधिकारी काफी ज्यादा तनावपूर्ण स्थिति के बावजूद भारतीयों को अपने देश लौटने में मदद कर रहे हैं। ढाका स्थित भारतीय उच्चायोग और चार उप-उच्चायोग के अधिकारियों के साथ बांग्लादेशी अधिकारियों का संपर्क काफी अच्छा है और उनकी हरसंभव मदद की जा रही है।

इनकी मदद से देश के कई हिस्सों से भारतीय नागरिकों को गाड़ियों से सुरक्षित भारतीय सीमा पर पहुंचाया जा रहा है। साथ ही जिनके पास हवाई जहाज से जाने के लिए टिकट की व्यवस्था हो रही है उन्हें हवाई अड्डा भी पहुंचाया जा रहा है। यह जानकारी विदेश मंत्रालय के सूत्रों ने दी है। सूत्रों ने बताया है कि कुछ भारतीय नागरिकों को बहुत ही खतरनाक स्थिति में बचाने में सफलता मिली है।

कार्यरत भारतीय कामगारों की स्थिति चिंताजनक

खास तौर पर दूर दराज स्थित परियोजनाओं में कार्यरत भारतीय कामगारों की स्थिति चिंताजनक थी। खुलना में ईरकान की परियोजना, एलएंडटी, टाटा प्रोजेक्ट्स, एफकान्स और ट्रांसरेल (सिराजगंज) में कार्यरत भारतीयों को सीमा पर लाने में सफलता मिली है। यह उच्चायोग और बांग्लादेश सैन्य बलों के सहयोग से संभव हुआ है।

कई कंपनियों के कर्मचारी हैं कार्यरत

इसके अलावा अशोक बिल्ड कंपनी, राइट्स, आइटीडी सीमेंटेशन (सिराजगंज), केईसी के कर्मचारियों ढाका में निजी तौर पर काम करने वाले भारतीय प्रोफेशनलों को एयरपोर्ट तक पहुंचाने में भी स्थानीय प्रशासन की मदद मिली है। सन फार्मा, आइओसीएल, एनपीटीसी जैसी भारतीय कंपनियों के काफी कर्मचारी वहां कार्यरत हैं।

भारतीय उच्चायोग बनाए हुए है नजर

इनमें से अधिकांश वापस लौट चुके हैं। ढाका स्थिति भारतीय उच्चायोग भारतीय नागरिकों को शीघ्रता से कंसुलेर सेवाएं दे रहा हैं और अगर किसी को आपातकालीन हालात में जरूरी प्रपत्रों की जरूरत है तो वह भी मुहैया कराया जा रहा है। भारतीय उच्चायोग यह भी सुनिश्चित कर रहा है कि ढाका से भारत की उड़ानें सुचारू रूप से चलती रहे।

कविता : हर तरफ़ गिद्ध ही गिद्ध बैठे हैं

एक युवा दे रहा
इस उम्मीद में साक्षात्कार।
उसका होगा चयन,
मिलेगा नौकरी का उपहार।
पूछ रहा था समय,
होकर वो निर्भय।
नौ घंटे का उसे समय देना हैं,
चार अंकों में सैलरी पाना है।
ज़ब जाहिर हुई शर्तें,
तब खुली अंदर की परतें।
अवकाश लेने की,
हमें पूर्व सूचना देनी होगी।
गर पाँच मिनट देरी हुई,
तब एक छुट्टी कट जाएगी।
बिना सूचित किए
अगर की छुट्टी तो दो दिन की
तनख्वाह लेंगे हम काट,
माह के अंत में लेंगे बाँट।
क्योंकि पीएफ भारी हैं,
दोनों तरफ़ का लेंगे काट।
युवा ने सोचा सभी
एक से एक सिद्दहस्त बैठे हैं,
ये सभी नियोक्ता नहीं।
नोचने को यारों
हर तरफ़ गिद्ध ही गिद्ध बैठे हैं।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)

भुबनेस्वर में बड़ा कार हादसा

मनोरंजन सासमल , स्टेटे हेड उडीशा

भुबनेस्वरः राजधानी भुबनेस्वर् में बड़ा कार हादसा । हादसा रेलवे स्टेशन के पास हुआ । कार रेलवे स्टेशन की दीवार तोड़कर सड़क किनारे पलटी हुई मिली। कार का एयर बैग निकल गया है । बताया गया है कि ड्राइवर घटनास्थल से लौट रहा है । जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की।

यमुना बैंक मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन के आगे कूदा शख्स, सुसाइड नोट से सामने आई वजह

दिल्ली में यमुना बैंक मेट्रो स्टेशन पर गुरुवार को एक यात्री ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। मौके पर पहुंची पुलिस को मृतक के पास से सुसाइड नोट मिला है। उसने सुसाइड नोट में आत्महत्या करने की वजह बताई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इसके बाद ही मेट्रो का परिचालन सामान्य हुआ।

नई दिल्ली। ब्लू लाइन के यमुना बैंक स्टेशन पर एक यात्री ने मेट्रो के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। इस घटना के कारण सुबह सवा दस बजे से साढ़े दस बजे तक 15 मिनट के लिए मेट्रो का परिचालन प्रभावित रहा। इससे यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

मेट्रो का परिचालन प्रभावित हुआः दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के अनुसार, यमुना बैंक स्टेशन पर सुबह सवा दस बजे एक यात्री मेट्रो के सामने ट्रेक पर कूद गया। इस वजह से राजीव चौक से वैशाली के बीच मेट्रो का परिचालन प्रभावित हुआ।

सुसाइड नोट में लिखी आत्महत्या की वजहः यात्री की बाडी हटाने के बाद मेट्रो का परिचालन सामान्य हुआ। बताया जा रहा है कि यात्री के पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसमें आत्महत्या का कारण आर्थिक तंगी बताई गई है।

मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन के आगे कूदकर बुजुर्ग ने दी थी जान

दिल्ली में कश्मीरी गेट मेट्रो स्टेशन पर एक 68 वर्षीय एक व्यक्ति ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली थी। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा था कि व्यक्ति की पहचान चावड़ी बाजार निवासी सुनील गुप्ता के रूप में हुई है। अधिकारी ने कहा कि पीड़िता के भाई के अनुसार, ₹गुप्ता पिछले कुछ वर्षों से तपेदिक से पीड़ित थे और उनके इलाज पर पहले ही छह लाख रुपये से अधिक खर्च हो चुके थे। दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) के मुताबिक, इस घटना के कारण रेड लाइन पर मेट्रो की सेवाएं कुछ देर तक प्रभावित रही। रेड लाइन दिल्ली में रिठाला को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में शहीद स्थल (नया बस अड्डा) से जोड़ता है।"

पुस्तक मेले में किताबों के साथ बिक रहे मसाले और जड़ी बूटियां, कहीं लगी है मसाज चेयर

भारत मंडपम (पहले प्रगति मैदान) में लगे दिल्ली पुस्तक मेला अब पाठकों को हताश और निराश करने लगा है। क्योंकि यहां पर किताबें कम और महिलाओं के पर्स और बैग की स्टॉल मसाज चेयर आदि दिखाई पड़ता है। बता दें भारत मंडपम के हाल नंबर 12 और 12 ए में बुधवार को पांच दिवसीय पुस्तक मेले का आयोजन किया गया है।

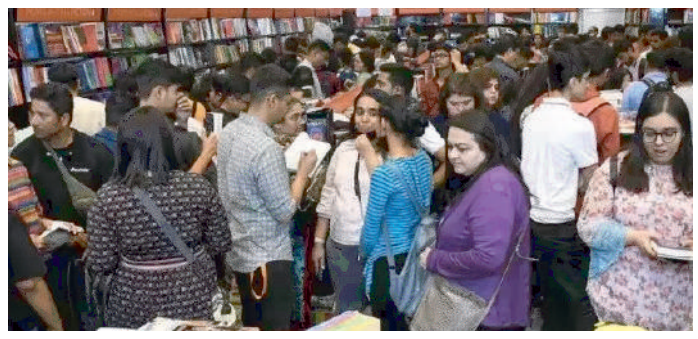

नई दिल्ली। कभी साहित्य का कुंभ कहे जाने वाले दिल्ली पुस्तक मेले में अब पाठकों को निराशा ही हाथ लगती है। मेले में नई और अच्छी पुस्तकें कम जबकि अन्य सामान ज्यादा बिकता नजर आता है। इस स्थिति से प्रकाशक और पाठक दोनों ही निराश हैं। अच्छे प्रकाशकों ने इस मेले से किनारा भी कर लिया है।

भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन (आईटीपीओ) व भारतीय प्रकाशक संघ (एफआईपी) के संयुक्त आयोजन 28वें दिल्ली पुस्तक मेले की शुरुआत बुधवार को भारत मंडपम (Bharat Mandapam) के हाल नं. 12 व 12 में हुई। पांच दिवसीय मेले का उदघाटन आईटीपीओ के कार्यकारी निदेशक रजत अग्रवाल ने किया।

इस पुस्तक मेले में 48 हिस्सेदार

हैरत की बात यह भी कि इसमें सिर्फ 48 भागीदार हैं। इनमें भी प्रकाशक बमुश्किल एक दर्जन हैं जबकि बाकी पुस्तक विक्रेता दिखाई पड़ते हैं। इसीलिए कभी दरियागंज में लगने वाले संडे बुक बाजार की तर्ज पर यहां किताबों की ढेरियां लगाकर उनकी सेल देखने को मिल रही है।

इससे भी आश्चर्यजनक यह है कि मेले में कहीं शारीरिक कमजोरी दूर करने वाली जड़ी बूटियां बिकती नजर आती हैं तो कहीं मसाले बिक रहे हैं। कहीं महिलाओं के पर्स और बैग की स्टॉल लगी है तो कहीं पर मसाज चेयर दिखाई पड़ती हैं। कहने के लिए दिल्ली पुस्तक मेले को सहारा देने के लिए स्टेशनरी, ऑफिस ऑटोमेशन और कॉरपोरेट गिफ्ट फेयर भी लगाया गया है, लेकिन मेले की गरिमा बनाए रखने की कोई कोशिश नजर नहीं आती।

अन्य सामान की स्टॉल गिफ्ट फेयर के तहत-आईटीपीओ

एफआईपी के अध्यक्ष नवीन गुप्ता पुस्तक मेले में पुस्तकों की सेल लगाए जाने और अन्य सामान बिकने के प्रति सख्त विरोध जताते हैं। उनका कहना है कि इसे लेकर आईटीपीओ से भी शिकायत की गई है। वहीं आईटीपीओ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि मेले में अन्य सामान की स्टॉल गिफ्ट फेयर के तहत दी गई हैं। सूत्रों की मानें तो एफआईपी और आईटीपीओ के बीच काफी खींचातानी भी चल रही है। उधर किताबघर प्रकाशन के संचालक राजीव शर्मा बताते हैं कि दिल्ली पुस्तक मेले की गरिमा का ध्यान नहीं रखे जाने का ही परिणाम है कि ज्यादातर प्रमुख प्रकाशकों ने इससे दूरी बना ली है। यहां अब अच्छी किताबें नहीं मिलतीं, इसीलिए विश्व पुस्तक मेले की तुलना में यहां पाठक भी अपेक्षाकृत बहुत ही कम आते हैं। भीड़ दिखाने के लिए इन लोगों को स्कूली बच्चे बुलाने पड़ते हैं। कमोबेश यही राय सामयिक प्रकाशन के संचालक महेश शर्मा ने भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि साहित्य और बाजारवाद को एक साथ लेकर नहीं चला जा सकता।

मंडावली, पटपड़गंज में बनकर तैयार वर्ल्ड क्लास स्कूल, शिक्षा मंत्री आतिशी ने किया निरीक्षण

सुषमा राना

नई दिल्ली। दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने गुरुवार को मंडावली में बन रही स्कूल की नई बिल्डिंग का निरीक्षण किया। उनके साथ शिक्षा विभाग और पीडब्ल्यूडी के अधिकारी भी मौजूद रहे।मंडावली, पटपड़गंज में केजरीवाल सरकार की शानदार स्कूल बिल्डिंग लगभग बनकर तैयार है। गुरुवार को शिक्षा मंत्री आतिशी ने पीडब्ल्यूडी व शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ इसका निरीक्षण किया। सर्वोदय कन्या/बाल विद्यालय की नई बिल्डिंग स्कूल अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है। जहाँ बच्चों के लिए स्मार्ट क्लासरूम, शानदार लैब, लाइब्रेरी, लिफ्ट सहित अन्य वर्ल्ड-क्लास सुविधाएँ मौजूद है। इस स्कूल का निर्माण पूरा हो चुका है, और फ़िनिशिंग का कार्य तेज़ी से चल रहा है। निरीक्षण के दौरान शिक्षा मंत्री आतिशी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि, जल्द से जल्द फ़िनिशिंग का काम पूरा कर स्टूडेंट्स को उनकी नई चमचमाती स्कूल बिल्डिंग समर्पित की जाए।

इस मौके पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि दिल्ली शिक्षा क्रांति के जनक मनीष सिसोदिया के विधानसभा में बनकर तैयार हुई ये शानदार नई स्कूल बिल्डिंग हर बच्चे तक वर्ल्ड-क्लास शिक्षा पहुंचाने के विज़न का हिस्सा है। अपने हर नए शानदार स्कूल के साथ हम इस विज़न को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ते जा रहे है। उन्होंने कहा कि इस स्कूल की शानदार बिल्डिंग जो शिक्षा को लेकर केजरीवाल सरकार की गंभीरता और प्राथमिकता का उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि हमारे बच्चे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के हकदार हैं और उन्हें विश्व स्तरीय शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए हम इस शानदार स्कूल का निर्माण कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि इस क्षेत्र के लगभग 4000 बच्चों को एक शानदार सरकारी स्कूल बिल्डिंग मिलने जा रही है।और यहां पढ़ने वाला हर छात्र इसपर गर्व करेगा।

उन्होंने कहा कि, मनीष सिसोदिया ने इस बिल्डिंग के डिज़ाइन को अपने मार्गदर्शन में तैयार करवाया था। बेशक आज उन्हें झूठे केस में जेल में रखा गया है लेकिन शिक्षा के उनके सपने को जेल में नहीं डाला जा सकता। मनीष सिसोदिया ने शिक्षा को लेकर जो भी सपने देखे हैं वो ज़रूर पूरे होंगे। और इस स्कूल में पढ़ने वाले छात्र न केवल खुद को और अपने परिवार को बल्कि मनीष सिसोदिया को भी गौरवान्वित करेंगे।

बता दें कि चार मंज़िला इस स्कूल में 64 कमरे है। स्कूल स्मार्ट क्लासरूम, लैब-लाइब्रेरी, लिफ्ट, एक्टिविटी रूम सहित अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है। निरीक्षण के दौरान शिक्षा मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए है कि फ़िनिशिंग कार्य को जल्द पूरा कर स्कूल क्षेत्र के बच्चों को समर्पित किया जा सके।

आपके दोस्त आपके चाहने वाले हमेशा आपके साथ बड़े होते हैं

सुषमा रानी

आप अपनी जिंदगी को कितना खुशियों से भर सकते हैं और कितनी खुशियां लुटा सकते हैं यह आपके ऊपर निर्भर करता है क्योंकि खुशियां बांटने से बढ़ती है और दुख बांटने से कम होता है तो आज हम खुशियों की बात करते हैं और और यह खुशियां उसे समय दोगुनी हो जाती है जब आपके दोस्त आपके चाहने वाले आपके परिवार आपके साथ खड़ा हो ऐसा ही हुआ मेरे साथ आज मेरे जन्मदिन दिवस के अवसर पर मेरे सारे दोस्त मेरा परिवार इस समय मुझे मेरे साथ खड़ा है और मुझे जो बधाई दे रहे है ये सब अनमोल है यह कहना था पर भाजपा नेता एवं प्रसिद्ध समाजसेवी तथा सदस्य PCR कमेटी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार एवं संकल्प फाउंडेशन के चेयरमैन दीपक तंवर वाल्मीकि का, जिनका जन्मदिन अभी हाल ही में बड़ी भव्यता से मनाया गया

इस शुभ अवसर पर दिल्ली से लोकसभा में लगातार तीसरी बार चुने जाने वाले मनोज तिवारी, बड़े समाज सेवी और बिजनेसमैन पवन गुप्ता, सिंगर एक्टर व फिल्म निर्माता रविंद्र सिंह ने अपने गीतों की छड़ी लगा दी और उनके साथ दिया प्रेम भाटिया ने साथ ही पंजाबी पॉप सिंगर शंकर साहनी , न्यूज़ एंकर सुधीर चौधरी ने दीपक तंवर की खूब तारीफ़ की मनोज तिवारी ने कहा अब तक ये सब को देते रहे है अब समय आ गया इनको देने का , सुधीर चौधरी ने कहा एक टाइम मे बहुत प्रॉब्लम में आ गया था तब उन्होंने पूरा साथ दिया था इनसे सच्चा अच्छा दोस्त कोई नहीं हो सकता सिंगर रवींद्र सिंह ने इस पार्टी में बहुत साँग गाये और सब का दिल जीत लिया यू कहा जाये तो दीपक तंवर के जन्मदिन पर अपने संगीत से 4 चाँद लगा दिये क्रिटिव फ़िल्म डायरेक्टर सीनियर जर्नलिस्ट सुनील पराशर ने कहा दीपक तंवर ने खूब दोस्त बनाए और इन सबके दिलो पर राज किया हैं ये उनकी बहुत बड़ी ख़ूबी है ना केवल बल्कि दिल्ली की जनता चाहती हैं की ये 2025 का चुनाव लड़े ये बहुत बड़ी जीत हासिल करेंगे।

संगम विश्वविद्यालय कुलपति ने की मंत्री से शैक्षणिक शिष्टाचार मुलाकात

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा, भीलवाड़ा। स्थानीय संगम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने भीलवाड़ा प्रभारी मंत्री एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग ,बाल अधिकारिता विभाग राजस्थान सरकार मंत्री डॉ.मंजू बाघमार से भीलवाड़ा स्थित सर्किट हाउस में शैक्षणिक शिष्टाचार मुलाकात की ।शिष्टाचार मुलाकात में प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने मंत्री डॉ.मंजू बागमार को राजस्थान सरकार द्वारा घोषित बजट में जो घोषणाएं करी है उसकी सफलता की कामना की। तथा उसके सफल क्रियान्वयन के लिए भीलवाड़ा प्रभारी मंत्री को उनके मंत्रालय विभाग तथा राजस्थान सरकार की योजनाओं को सफल क्रियान्वयन के लिए सुझाव ,मॉनिटरिंग आदि के लिए विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों तथा स्टाफ के सहयोग का आश्वासन दिया ।मुलाकात में प्रो सक्सेना ने मंत्री जी के कार्य की प्रशंसा करी ।उन्होंने कहा कि मंत्री मैडम की विधानसभा में प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा है तथा विपक्षी दल भी आपके काम की तारीफ करते है की मंत्री जी अच्छा बोलती है। ज्ञात हो की मंत्री डॉ मंजू बाघमार मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में प्रोफेसर रही है ,तथा विश्वविद्यालय कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना के साथ सहकर्मी रहीं हैं ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023